शासकीय गजानन्द अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय भाटापारा जिला बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.)

सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण ग्राम गुड़ेलिया
2020-21

निर्देशक

प्रो. शैलेन्द्र कुमार वर्मा
(सहायक प्रध्यापक भूगोल)
शासकीय गजानन्द अग्रवाल
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भाटापारा (छ.ग.)

प्रस्तुत कर्ता

राजेश कुमार साहू
(बी. ए. अंतिम वर्ष)
शासकीय गजानन्द अग्रवाल
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भाटापारा (छ.ग.)

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

अवस्थिति मानचित्र ग्राम – गुड़ेलिया (भाटापारा)

भारत

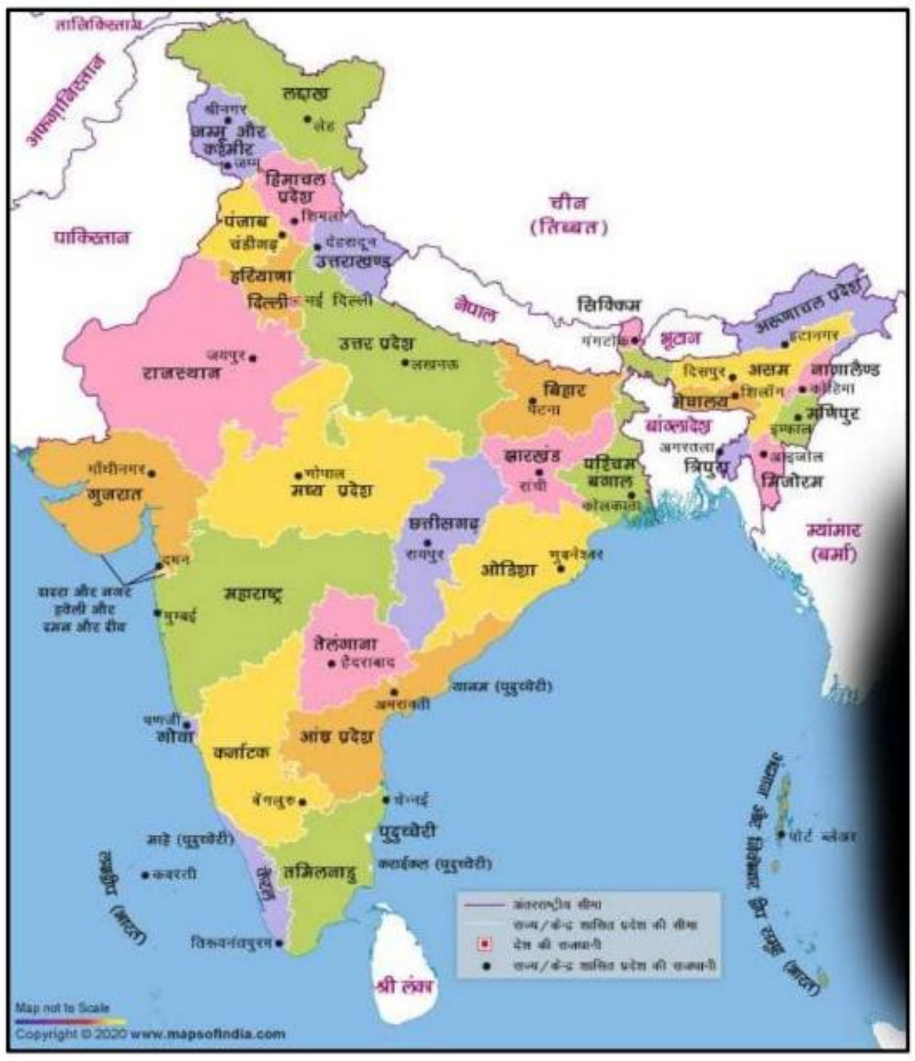

छत्तीसगढ

ग्राम – गुड़ेलिया

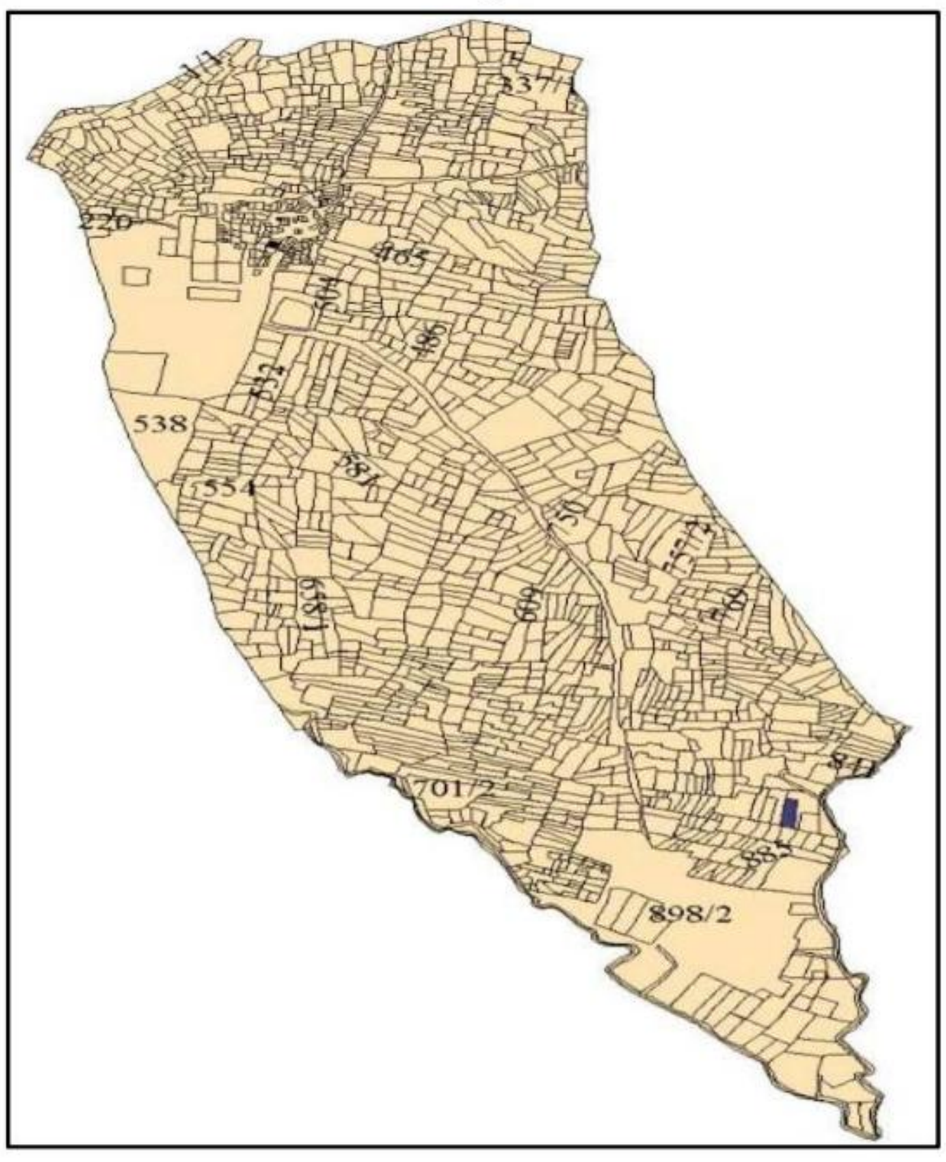

जिला – बलौदा बाजार–भाटापारा

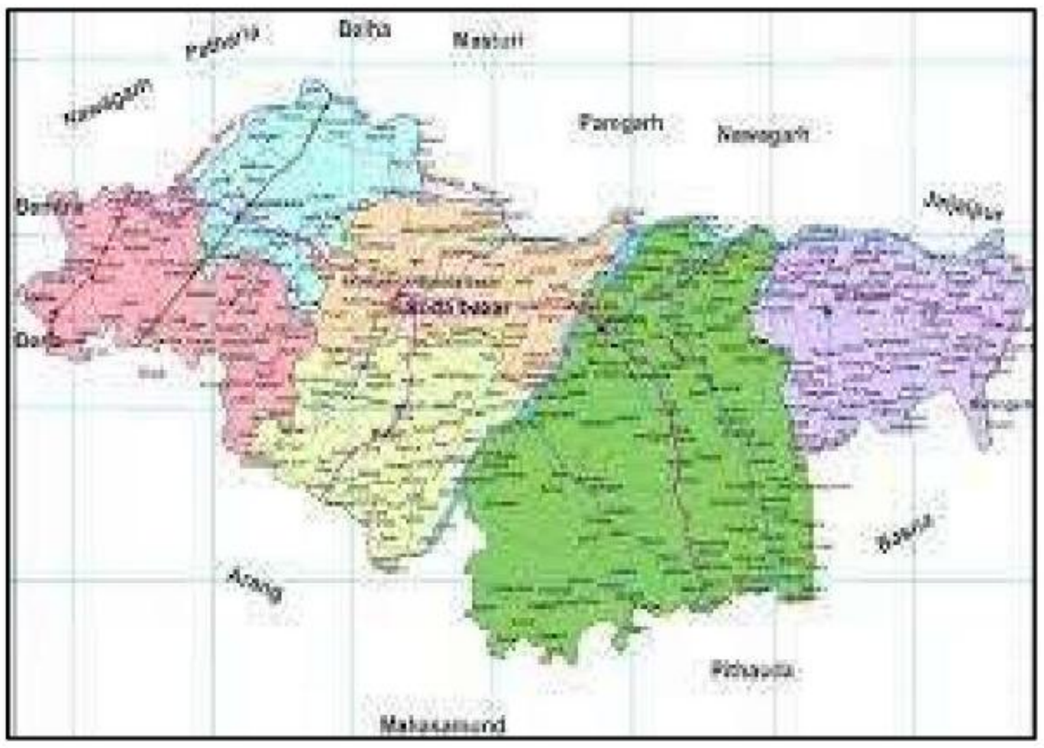

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

घोषणा – पत्र

मैं **राजेश कुमार साहू** नितान्त रुप से यह स्वीकार करता हूँ कि **"सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण"** भाटापारा विकासखण्ड (जिला बलौदा बाजार – भाटापारा) ग्राम – गुड़ेलिया का एक प्रतीक अध्ययन विषय पर प्रस्तुत यह मेरा परियोजना कार्य बी. ए. तृतीय वर्ष (भूगोल) की उपाधि हेतु स्वयं के प्रयासों का प्रतिफल हैं।

यह परियोजना कार्य को मैंनें **प्रो. शैलेन्द्र कुमार वर्मा** (सहायक प्रध्यापक भूगोल) शासकीय गजानन्द अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय – भाटापारा (छ.ग.) के निर्देशन में पूरा किया हूँ, जो कि अनुमोदित विषय सूची के अनुरुप हैं।

दिनांक
28 / 04 / 2021

राजेश कुमार साहू
बी.ए. तृतीय वर्ष भूगोल
शासकीय गजानन्द अग्रवाल
स्नातकोत्तर महाविद्यालय–भाटापारा (छ.ग.)

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

<u>प्रमाण – पत्र</u>

मैं यह प्रमाणित करता हूँ, कि **"सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण"** ग्राम – गुड़ेलिया भाटापारा विकासखण्ड (जिला बलौदा बाजार – भाटापारा) का एक प्रतीक अध्ययन शीर्षक पर परियोजना कार्य में वर्णित सामाग्री परियोजना कर्ता के ही परियोजना कार्य का परिणाम हैं।

यह परियोजना कार्य भूगोल अध्ययन शाला शासकीय गजानन्द अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय – भाटापारा (छ.ग.) बी. ए. तृतीय वर्ष (भूगोल) की उपाधि हेतु अनुमोदित विषय सूची के अनुरुप हैं।

मैं उनके सफल एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ

दिनांक
28 / 04 / 2021

निर्देशक
प्रो. शैलेन्द्र कुमार वर्मा
(सहायक प्रध्यापक भूगोल)

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

आभार

सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण बी.ए. अंतिम वर्ष प्रायोगिक भूगोल का एक अति महत्वपूर्ण विषय हैं। जिसके माध्यम से विद्यार्थीयों को किसी भी ग्राम का सामाजिक आर्थिक स्थिति को समझने का मौका मिलता हैं तथा सर्वेक्षण स्थल में कार्य करने का अनुभव प्राप्त होता हैं एवं विद्यार्थी को भविष्य में परियोजना कार्य में सहायक सीध होता हैं। इसी कड़ी में प्रस्तुत कर्ता राजेश कुमार साहू शासकीय गजानन्द अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय भाटापारा के छात्र द्वारा सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण ग्राम गुड़ेलिया 2020–21 में प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

प्रस्तुत सर्वेक्षण में हमारे सहायक प्रध्यापक (प्रोफेसर) शैलेन्द्र कुमार वर्मा शासकीय गजानन्द अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय भाटापारा, और मेरे पिता जी श्रीमान जुलाराम साहू एवं मेरे माता जी श्रीमति नन्दकुँवर साहू व मेरे भ्राताश्री राधेश्याम साहू सदैव सहयोग एवं उत्साहवर्ध्दन किया हैं। सर्वेक्षण के तथ्यों के विश्लेषण करने में प्रोफेसर शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने सदैव सहयोग किया हैं। जिसके लिए मैं राजेश कुमार साहू पूज्य गुरुदेव प्रोफेसर शैलेन्द्र कुमार वर्मा का हृदय से धन्यवाद करता हूँ एवं मैं अपने प्रिंय सहपाठियों एवं मित्रों का आभार व्यक्त करता हूँ।

अंत में मैं अपने अनुज चिन्तारात साहू का अमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करता हूँ जिसके सहयोग के बिना यह कार्य मेरे लिए संभव नहीं था।

दिनांक

28 अप्रैल 2021

राजेश कुमार साहू
घर नं. 78 ग्राम गुड़ेलिया
भाटापारा – 493118
दूरभाष नं. : 6264264197

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

विषय–सूची

क्रमांक	अध्याय	पृष्ट
1. :	**भौगोलिक परिचय** स्थिति एवं विस्तार, उच्चावच, भू–वैज्ञानिक संरचना, अपवाह प्रणाली, जलवायु।	7-12
2. :	**जनसंख्या संरचना** आयुवार जनसंख्या, व्यवसायिक संरचना, जातीय संरचना।	13-15
3. :	**आवासीय दशा एवं भूमि उपयोग** अधिवास के प्रकार, उद्देश्य, विशेषताएँ, गांव की बसावट एवं अन्य भूमि, ग्राम गुड़ेलिया में भूमि उपयोग।	16-23
4. :	**सामाजिक एवं सांकृतिक दशायें** जातीय संरचना – वर्ण–व्यवस्था, जाति–व्यवस्था, विवाह, सांस्कृतिक दशायें – होली, दिपावली, लोक नृत्य, सवनाही रामायाण, गायत्री यज्ञ, नामिव्यक्ति का आगमन, सार्वजनिक स्थान।	24-29
5. :	**मानव व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति** व्यवसायों का वर्गीकरण, व्यावसायिक संरचना, आर्थिक स्थिति।	30-32
6. :	**सर्वेक्षित ग्राम की प्रमुख्य सम्सयाएं** जल की सम्सया, चारागाह भूमि की सम्सया, रोजगार की सम्सया, बिजली की सम्सया ।	33-34
7. :	**सर्वेक्षण के समय याद रखने योग्य बाते** सर्वेक्षक पूर्वाग्रह से युक्त ना हों, अप्रिय शब्दों का प्रयोग ना करे, सही फार्मेट, स्थानीय परिवेश में घुल मिल जाना।	35-37
8. :	**जल संरक्षण** जल का महत्व, वर्षा जल संग्रहण, कॉलेज संबंधित फोटो ग्राफीक एवं गैलरी।	38-49

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

अध्याय - पहला

भौगोलिक परिचय

(1) स्थिति एवं विस्तार : –

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया की स्थिति 21°47'20" से 21°48'20" उत्तरी अक्षांश तथा 82° 5'10" से 82° 5'20" पूर्वी देशान्तर तक हैं। सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया भाटापारा शहर से पूर्व–उत्तर में लगभग 20 किलो मीटर दूर मोपका मार्ग में स्थित हैं, सर्वेक्षित ग्राम के आस–पास के ग्राम जैसे मोपका गुड़ेलिया से 3.5 कि.मी.दूर दक्षिण–पश्चिम में, धनेली 5.00 कि.मी.दूर पश्चिम–उत्तर में, पाटन 2.00 कि.मी.उत्तर–पूर्व एवं बोरसी 6.00 कि.मी. दक्षिण–पूर्व दिशा में स्थित हैं।

(2) उच्चावच :–

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया छत्तीसगढ मैदान का भू–भाग हैं। जो मुखयतः महानदी बेसिन का मैदानी भाग होने के कारण यहां उच्चावच में 10 मीटर से 30 मीटर की अन्तर देखने को मिलता हैं। एवं भाटापारा विकासखण्ड का औसत ऊचाई 261 मीटर हैं। उच्चावच के आधार पर सर्वेक्षित ग्राम में 10 मीटर का ढाल देखने को मिलत हैं। **सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया समुद्र तल से 1162 फिट ऊँचाई पर स्थित हैं।**

(3) भू–वैज्ञानिक संरचना :–

सर्वेक्षित भाग प्रायद्वीपीय भारत का ही भाग हैं इसमें प्रायद्वीपीय भारत की समस्त विशेषताएं परिलक्षित होता हैं। भू–गर्भिक संरचना मिट्टी वनस्पति और भू–दृश्यों के विकास में भौगोलिक पृष्ठ भूमि के निर्माण में महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। किसी क्षेत्र में पाये जाने वाले चट्टानो के ज्ञान के बिना इस क्षेत्र की धरातलीय स्वरुप एवं मिट्टी का वर्णन दुष्कर हैं। अतः भू–वैज्ञानिक संरचना एवं भौतिक भू–दृश्यों के अधिकांश पक्षों के अध्ययन के लिए आवश्यक हैं।

सर्वेक्षित क्षेत्र में बालुका पत्थर पाया जाता हैं जिसका उपयोग यहां के स्थानीय कलेसर (गिट्टी) उद्योग में किया जाता हैं।

(4) अपवाह प्रणाली :–

सर्वेक्षित क्षेत्र में नाला देखने को मिलता हैं! जिसमें जमुनईया नाला विशेष उल्लेखनीय हैं जमुनईया नाला जो कि शिवनाथ नदी का सहायक बडा नाला हैं। जमुनईया नाला शिवनाथ नदी में सिंघासन पाठ नामक धार्मिक स्थान में मिलता हैं सिंघासन पाठ शिवनाथ नदी और जमुनईया नाला का संगम स्थान हैं।

(5) जलवायु :–

"जलवायु का स्थान प्राकृतिक तत्वों में महत्वपूर्ण हैं क्योकि किसी प्रदेश की प्राकृतिक एवं सास्कृतिक दोनो की परिस्थितिया इससे प्रभावित हैं।"

Semple E. C.

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

जलवायु जनसंख्या के वितरण के शारिरीक तथा मानसिक क्रियाओं को प्रभावित करने वाले कारणों में सबसे महत्वपूर्ण हैं। मानव का खान–पान को स्वास्थ, रहन–सहन, वेश–भूषा जीविकोपार्जन के साधन परिवहन तथा सामाजिक जीवन पर जलवायु का स्पष्ट नियंत्रण होता हैं!

सर्वेक्षित ग्राम में मानसूनी जलवायु पाया जाता हैं। इस प्रकार भाटापारा विकासखण्ड की जलवायु को तीन ऋतुओं में बॉटा जा सकता हैं जो निम्न हैं –

(1) ग्रीष्म ऋतु (2) वर्षा ऋतु (3) शीत ऋतु

(1) ग्रीष्म ऋतु :– यह उत्तर पूर्व मानसून के बाद का समय होता हैं जो कि 14–15 जनवरी के बाद से प्रारम्भ होकर मध्य जून तक रहता हैं इस समय यहा असहनीय गर्मी पडती हैं यहा अधिकतम तापमान मई के माह में रहता हैं। इस माह का अधिकतम तापमान 42 से.ग्रे. तक पहुच जाता हैं।

(2) वर्षा ऋतु :– वर्षा ऋतु मध्य जून से लेकर मध्य अक्टूबर तक रहता हैं। इस क्षेत्र की अधिकांश वर्षा जुलाई व अगस्त माह में होता हैं। वर्षा ऋतु प्रमुख रुप से दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं के द्वारा होती हैं। यहा औसत वार्षिक वर्षा लगभग 150 से.मी. हैं।

विकासखण्ड भाटापारा में वार्षिक वर्षा (मि.मी.)

स्त्रोत दाऊकल्याण सिंह कृषि महाविद्यालय भाटापारा (छ.ग.)

वार्षिक वर्षा	सन्
950.02	2012–13
1114.8	2013–14
1112.4	2014–15
1209.2	2015–16
1409.03	2016–17
620.01	2017–18
820.05	2018–19
1315.08	2019–20

(3) शीत ऋतु :– शीत ऋतु का आगमन मानसून की वापसी से होता हैं यहा 15 अक्टूबर से 15 फरवरी तक का काल शीत ऋतु का होता हैं दिसम्बर जनवरी माह सर्वाधिक ठण्डे माह होता हैं शेष माह में ठण्ड सामान्य रहती हैं दिसम्बर का औसत न्यूनतम तापमान 8°–9° सेल्सियस रहता हैं, तथा फरवरी माह में तापमान में वृध्दि प्रारम्भ हो जाता हैं।

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

वर्षा ऋतु :– वायु में उपस्थित आर्द्रता जब घनीभूत होकर पृथ्वी में बरसती हैं तो उसे वर्षा कहते हैं। सर्वेक्षित ब्लाँक भाटापारा में सामान्य औसत वर्षा लगभग 150 से.मी. होती हैं, सामान्यता सर्वेक्षित क्षेत्र में मानसून विभंगता जैसे समस्या देखने को मिलता हैं एक–एक/दो–दो सप्ताह वर्षा ना होने के कारण फसल पर प्रतिकुल प्रभाव देखने को मिलता हैं, जो एक चिन्ता जनक विषय हैं।

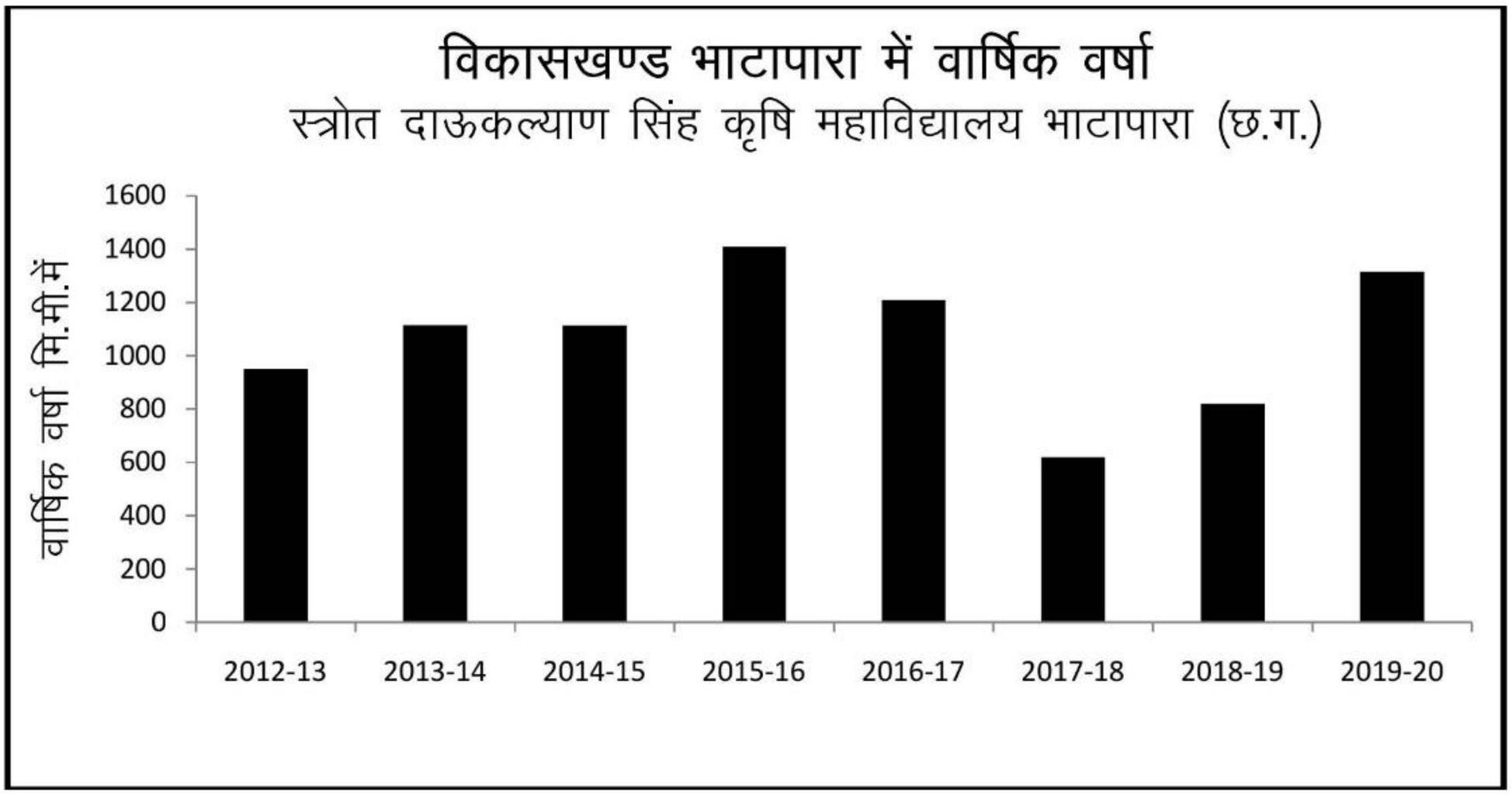

तापमान :– वायु तथा मिट्टी का तापमान पौधे के विकास की सभी प्रक्रियाओं को प्रभावित करता हैं और कुछ प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक ऊर्जा स्त्रोत भी हैं।

फरवरी–मार्च के महीने में जब सूर्य उत्तरायण होता हैं, जिले में तापमान बढ़ना शुरु हो जाता है। यह प्रवृत्ति मई तक रहती हैं।

बलौदाबाजार–भाटापारा जिला में मासिक तापमान 2020 (से.ग्रे.में)

स्त्रोत दाऊकल्याण सिंह कृषि महाविद्यालय भाटापारा (छ.ग.)

स. क्र.	माह	अधिकतम तापमान	न्यूनतम तापमान	औसत तापमान
1	जनवरी	23.04	9.10	16.07
2	फरवरी	28.57	14.97	19.27
3	मार्च	35.00	15.99	25.49
4	अप्रैल	41.60	23.60	32.06
5	मई	43.35	26.92	35.13
6	जून	34.02	26.72	30.37
7	जुलाई	30.98	24.50	27.74
8	अगस्त	30.42	24.55	27.48

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

9	सितम्बर	31.06	23.72	27.39
10	अक्टूबर	27.44	19.58	23.94
11	नवम्बर	25.69	17.11	21.40
12	दिसम्बर	24.50	14.05	19.27

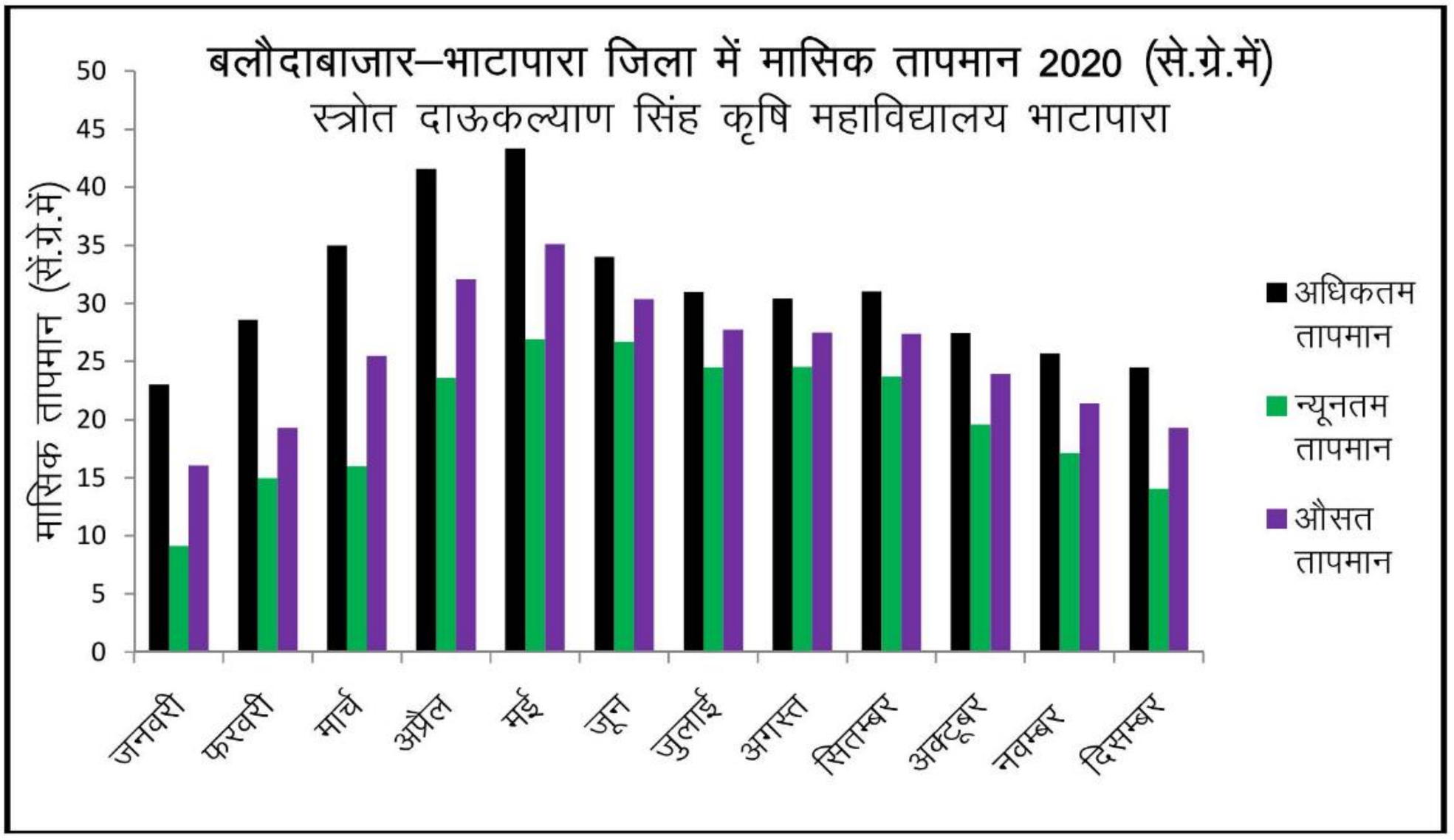

आर्द्रता :– वायु में उपस्थित जल वाष्प की मात्रा आर्द्रता कहलाती हैं। जिले में सापेक्षिक आर्द्रता दक्षिण पश्चिम मानसून के समय लगभग 70% (प्रतिशत) पाया जाता हैं। जो सर्वाधिक हैं इसके बाद आर्द्रता क्रमशः कम हो जाता हैं। तथा शीत ऋतु में पूर्णतः बहुत कम हो जाता हैं।

मिट्टी :– डॉ. बैनेट के अनुसार – "मिट्टी भू–पृष्ट पर मिलने वाले असंगठित पदार्थो की वह परत हैं जों मूल चट्टानो अथवा वनस्पति के योग से बनता हैं।"

मिट्टी किसी देश की अमूल्य सम्पदा हैं। कृषि का आधार मिट्टी ही हैं, किसी भी स्थान की वनस्पति कृषि का स्वरुप तथा भूमि उपयोग मिट्टी की प्रकृति द्वारा निर्धारित होते हैं। फसलों का प्रादेशिक वितरण एवं उत्पादन की मात्रा भी मिट्टी से प्रभावित होता हैं।

विलकाक्स के अनुसार :– "मानव सभ्यता का इतिहास मिट्टी का इतिहास हैं और प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा मिट्टी सें ही प्रारम्भ होती हैं।"

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

सर्वेक्षित ग्राम में मृदा के प्रकार

(1) भाटा (2) मटासी (3) डोरसा (4) कन्हार (5) कछारी

वनस्पति :– "वन प्रकृति का उपहार हैं" किसी क्षेत्र की वनस्पति वहा के वातावतण की क्षमताओं की सूचना देती हैं तथा वहा के वातावरण से सम्बन्ध स्थापित करती हैं।

भाटापारा ब्लॉक की प्राकृतिक वनस्पति मानसूनी जलवायु का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये ग्रीष्म काल में अपनी पत्तियां गिरा देती हैं और वर्षा ऋतु में नई–नई पत्ते आना शुरु हो जाती हैं। इसी कारण चारो ओर हरियाली देखने को मिलता हैं।

इस क्षेत्र में वर्तमान में वनस्पति के रुप में बबूल कटिली झाडिया, तेंदू, महुआ, नीम, पीपल, इमली, पलास, बरगद, इत्यादि पाया जाता हैं। खुले क्षेत्रो में घास की प्रधानता हैं।

बलौदाबाजार–भाटापारा जिला में मासिक वाष्पोत्सर्जन (मि.मी.) 2020

स्त्रोत दाऊकल्याण सिंह कृषि महाविद्यालय भाटापारा

स.क्र.	माह	औसत वाष्पोत्सर्जन
1	जनवरी	3.54
2	फरवरी	4.27
3	मार्च	6.00
4	अप्रैल	9.88
5	मई	12.27
6	जून	5.87
7	जुलाई	3.98
8	अगस्त	3.5
9	सितम्बर	3.67
10	अक्टूबर	4.18
11	नवम्बर	3.70
12	दिसम्बर	6.60

Scanned by TapScanner

बलौदाबाजार–भाटापारा जिला में मासिक वाष्पोत्सर्जन (मि.मी. में)
2020
स्त्रोत दाऊकल्याण सिंह कृषि महाविद्यालय भाटापारा

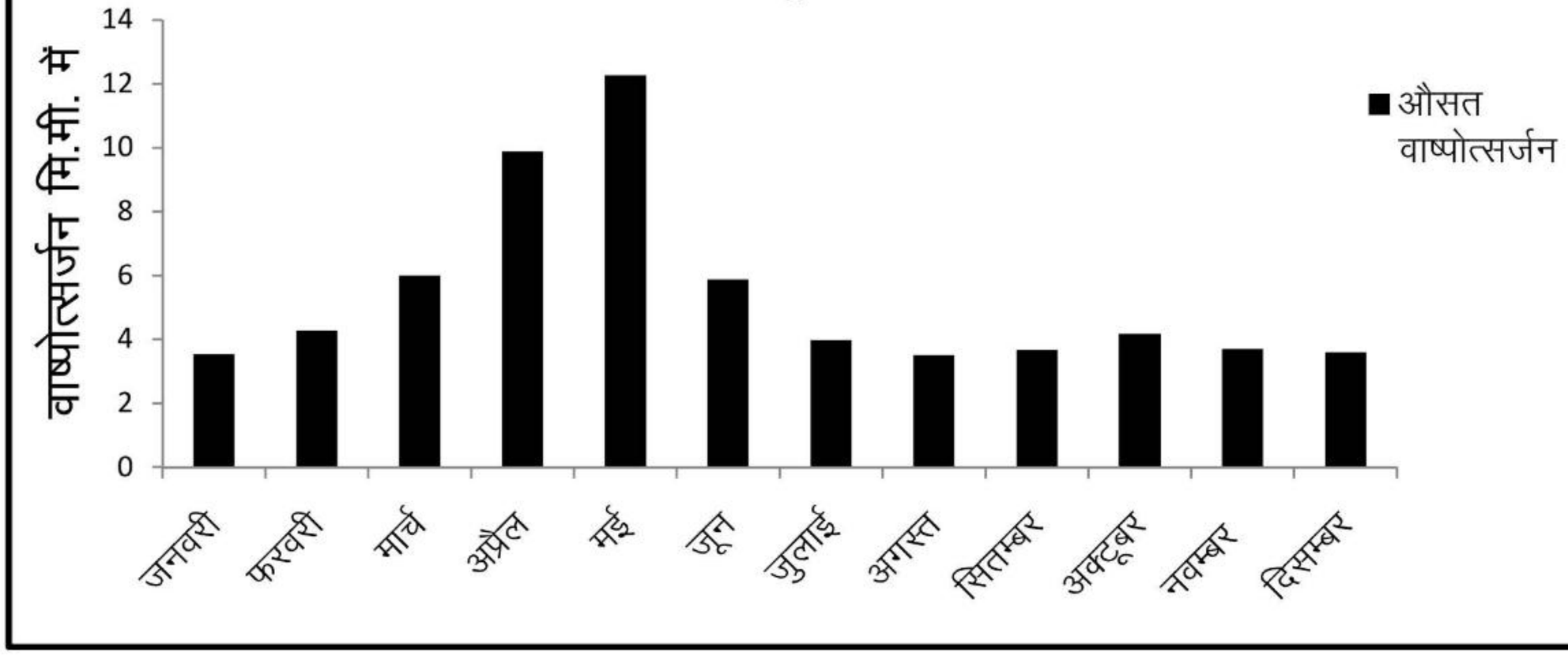

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

अध्याय - दूसरा

जनसंख्या संरचना

जनसंख्या संबंधित ज्ञान की जिज्ञासा मानव का उसके अस्तित्व काल से रहा हैं वह इसके सम्बन्ध में विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान गत रखकर किसी न किसी रुप में जानकारी रखता हैं। ये उद्देश्य विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। जिसमें स्थान उद्देश्य के अनुसार परिवर्तन पाया गया हैं। भारत में महाभारत, कौटिल्य का अर्थशास्त्र और आइने अकबरी आदि ऐसी पुस्तकें हैं जो प्राचीन काल में जनसंख्या सम्बन्धी प्रगति के घोतक हैं।

जनसंख्या की संरचना का अध्ययन भूगोल में एक महत्वपूर्ण पक्ष हैं। जनसख्या सरंचना को जनसंख्या संयोजन भी कहतें हैं। जनसंख्या के अन्तर्गत जाति, धर्म, राष्ट्रीयता, भाषा, व्यवसायिक ढ़ाचा, सामुदायिक ढ़ाचा, स्त्री–पुरुष, अनुपात आयु, वृध्दि, दर, ग्रामीण नगरीय अनुपात, स्वास्थ शिक्षा इत्यादि आते हैं। इन सभी तत्वों का किसी क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक दशाओं पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता हैं।

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में जनसंख्या मुख्यतः कृषि तथा मजदुरी पर आधारित हैं। वहां पर 12 प्रकार की जातियॉ निवास करती हैं। ग्राम गुड़ेलिया की जनसंख्या लगभग 1827 व्यक्ति हैं प्राथमिक आंकड़े के अनुसार। यहां कुल जनसंख्या 1827 जिसमें बाल जनसंख्या 467 व्यक्ति, युवा जनसंख्या 1052 व्यक्ति तथा वृध्द जनसंख्या 308 व्यक्ति हैं।

आयुवार जनसंख्या

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में आयुवार जनसंख्या निम्न हैं।

	0–14 वर्ष	15–59 वर्ष	60 से अधिक
महिला	264	504	148
पुरुष	203	548	160

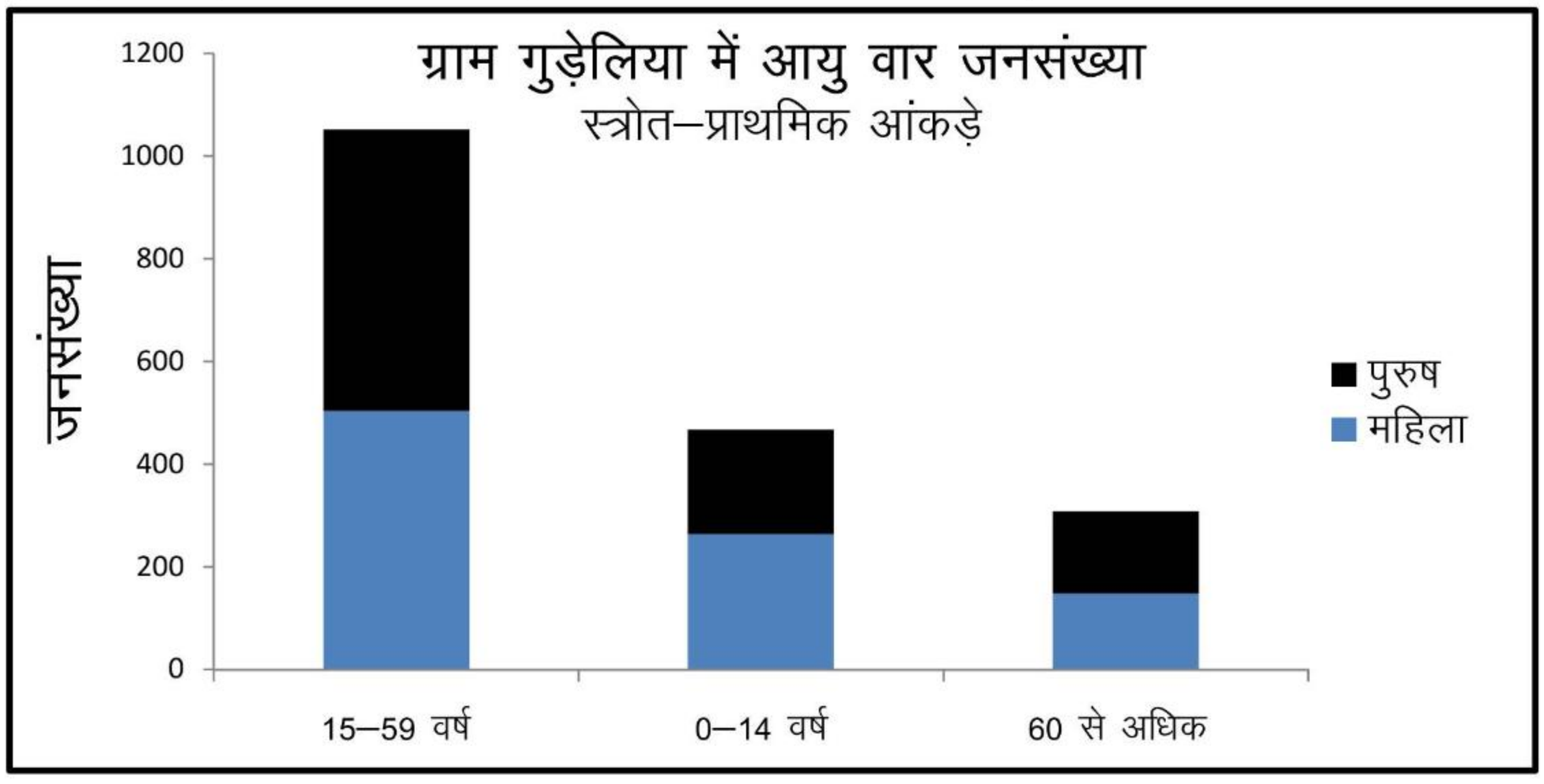

Scanned by TapScanner

"जीविकोपार्जन तथा जीवनयापन के लिए की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय कहते हैं।"

व्यवसाय मानव जीवन को प्रभावित करने वाला सम्भवतः सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक विशेषता हैं। किसी भी प्रदेश की जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इससे उस ग्राम की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास के स्तर का पता चलता हैं। आर्थिक विकास के स्तर का ज्ञान। ग्राम की भविष्य योजना के सम्पूर्ण प्रक्रिया को दिशा निर्धारित करने में सहायक होता हैं।

व्यावसायिक संरचना

ग्राम गुड़ेलिया के व्यावसायिक प्रतिरुप

(1) प्राथमिक व्यवसाय – लगभग 350 परिवार

(2) द्वितीय व्यवसाय – लगभग 104 परिवार

(3) तृतीय व्यवसाय – लगभग 13 परिवार

(4) चतुर्थक व्यवसाय – लगभग 15 परिवार

जातीय संरचना

प्रत्येक समाज के कुछ सैध्दांतिक तथा संस्थागत आधार होता हैं। इन्हीं आधारों पर किसी देश की संस्कृति की पहचान बनती हैं। तथा उसकी प्राचीनता एवं विशेषताओं कों परखा जा सकता हैं। सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में हिन्दू समाज के लोग रहते हैं।

ग्राम गुड़ेलिया एक हिन्दू जनसंख्या वाला ग्राम हैं। तथा यहा के सामाजिक संरचना निम्न सारणी में दिया गाया हैं।

ग्राम गुड़ेलिया में जातीय संरचना

स्त्रोत – प्राथमिक आंकड़े

क्रमांक	जाति	परिवार
1	गोंड	279
2	साहू	72
3	यादव	70
4	मानिकपुरी	45
5	शर्मा	04
6	देवदास	04
7	निर्मलकर	02
8	वर्मा	02
9	विश्वकर्मा	01

Scanned by TapScanner

10	नाई	01
11	जयसवाल	01
12	अग्रवाल	01

ग्राम गुड़ेलिया में जातीय संरचना

स्त्रोत – प्राथमिक आंकड़े

Scanned by TapScanner

अध्याय - तीसरा

आवासीय दशा एवं भूमि उपयोग

गृह प्रकार :–

मकान व्यवस्था की आधार इकाई होती हैं। "ये सांस्कृतिक भूमि बचाव की एक अति उभयनिष्ठ गुण हैं। क्योंकि यह उभयनिष्ठ हैं, मकान भूमिक्षरण के अनेक क्षेत्रों के विश्लेषण में महत्वपूर्व तथ्य हो सकता हैं।"

रिकर्ट ब्रन्हस ने लिखा हैं कि "मकान एक ऐसा भौगोलिक आश्चर्य हैं जो हमारे रोजमर्रा के जीवन को पूर्णतः परिबध्द करता हैं।"

अतएवं उन्होने मानव भूगोल पारम्परिक स्थिति व प्राकृतिक के अनेक पहलुओं की सूची में मकान को रखने में सहमति जाहिर की।

"किसी प्राथमिक भूगोलवेत्त को चाहिए कि वह सर्वप्रथम निवास एवं निवास करने के स्थाई तरीकों को अध्ययन पहले करें। यूरोप में भूगोलवेत्त को चाहिए कि वे पारम्परिक मकानों की किस्मों के लिए समर्पित होकर व सावधानी पूर्वक करें। क्योंकि परिवारिक गृह अभी भी कृषि भूमि के संरक्षण एवं सांस्कृतिक विस्तार को प्रस्तुत करने की अनेक विशिष्ट राहे प्रदान करती हैं।"

अधिवास के प्रकार

अधिवास मुख्यतः दो प्रकार का होता हैं :–

(1) नगरीय अधिवास तथा (2) ग्रामीण अधिवास

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया ग्रामीण अधिवास के अन्तर्गत आता हैं, जो संघन बस्ती प्रकार हैं। ग्रामीण अधिवास प्राथमिक व्यवसाय, विस्तृत भूमि उपयोग प्रतिरुप, कम जनसंख्या घनत्व, मन्द एवं पुराने आवागमन एवं संचार तंत्र, आर्थिक विकास में पिछडेपन, परपरावादी जीवन पध्दति, अधिक सामुदायिक सहयोग और कम प्रदूषित पर्यावरण आदि की विशेषताओं से संपन्न होते हैं। ये आकार में छोटे होते हैं। आकार, आकारिकी एवं कार्य के आधार पर इन्हें खेत, घर, नया पुरवा और ग्राम के रुप में विभाजित करते हैं। भारतीय जनगणना के अनुसार ग्राम एक सूक्ष्मतम प्रशासनिक इकाई हैं जो ऐसे भूखंड को प्रदर्शित करता है जिसकी सीमाओं का निर्धारण राजस्व सर्वेक्षण या भूकर सर्वेक्षण द्वारा किया जाता हैं। एक राजस्व गांव में एक मुख्य बसाव क्षेत्र और कई पुरवे स्थित होते हैं। गांव के सामान्य प्रशासन एवं विकास में ग्राम पंचायत का सहयोग होता है जिसके सदस्यों का चुनाव मतदान के द्वारा किया जाता हैं।

Scanned by TapScanner

ग्राम गुड़ेलिया में अधिवास की समुदायिक संरचना :–

सर्वेक्षण के समय (जनवरी – फरवरी 2021) में गांव की कुल जनसंख्या 1827 व्यकित 403 मकानों में निवास करते थे। सम्पूर्ण आबादी 12 जातियों में विभाजित किया गया हैं। विभाजन के अनुसार गोंड समुदाय के लोगों की बहुतायत थी जों मुख्यतः 279 घरों में रहते हैं। इस जाति के लोग गरीब, कृषक, मजदूर तथा शराबी हैं। तथा इनकी बसावट स्थिति ग्राम के लगभग सभी भागों में हैं। दूसरी बडी जाति साहू हैं जो मुख्यतः 72 परिवारों में हैं। तथा इस जाति के लोग मुख्यतः कृषि का कार्य करते हैं। अन्य जातियां निम्न प्रकार हैं :– यादव (राउत), मानिकपुरी, शर्मा, देवदास, निर्मलकर, वर्मा, विश्कर्मा, नाई, जयसवाल, अग्रवाल सर्वेक्षित ग्राम में हैं।

सर्वेक्षित गांव में मकानों कें प्रकार भवन निर्माण सामाग्री के आधार पर :–

(1) मिट्टी के दीवार एवं खपरैल की छत :–

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में 50 मकानों के दीवार मिट्टी की हैं तथा 50 मकानों में खपरैल के छत हैं। जो सर्वेक्षण के प्राथमिक आंकडों से स्पष्ट हैं।

मिट्टी के दीवार एवं खपरैल की छत का आवास

(2) पक्का दीवार एवं पक्का छत :–

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में 113 पक्का दीवार वाला मकान हैं, तथा 113 मकानों के छत पक्का हैं। इस गांव में चार वर्ष पहले मिट्टी के घर अधिक मात्र में पाया जाता था, जो कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत यह गांव विकास की ओर तेजी से बड़ रहा हैं इस ग्राम के सर्वे के अनुसार प्रति वर्ष 30 परिवार का प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 30 नया पक्का मकान बनाया जाता हैं।

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

पक्का दीवार एवं पक्का छत का आवास

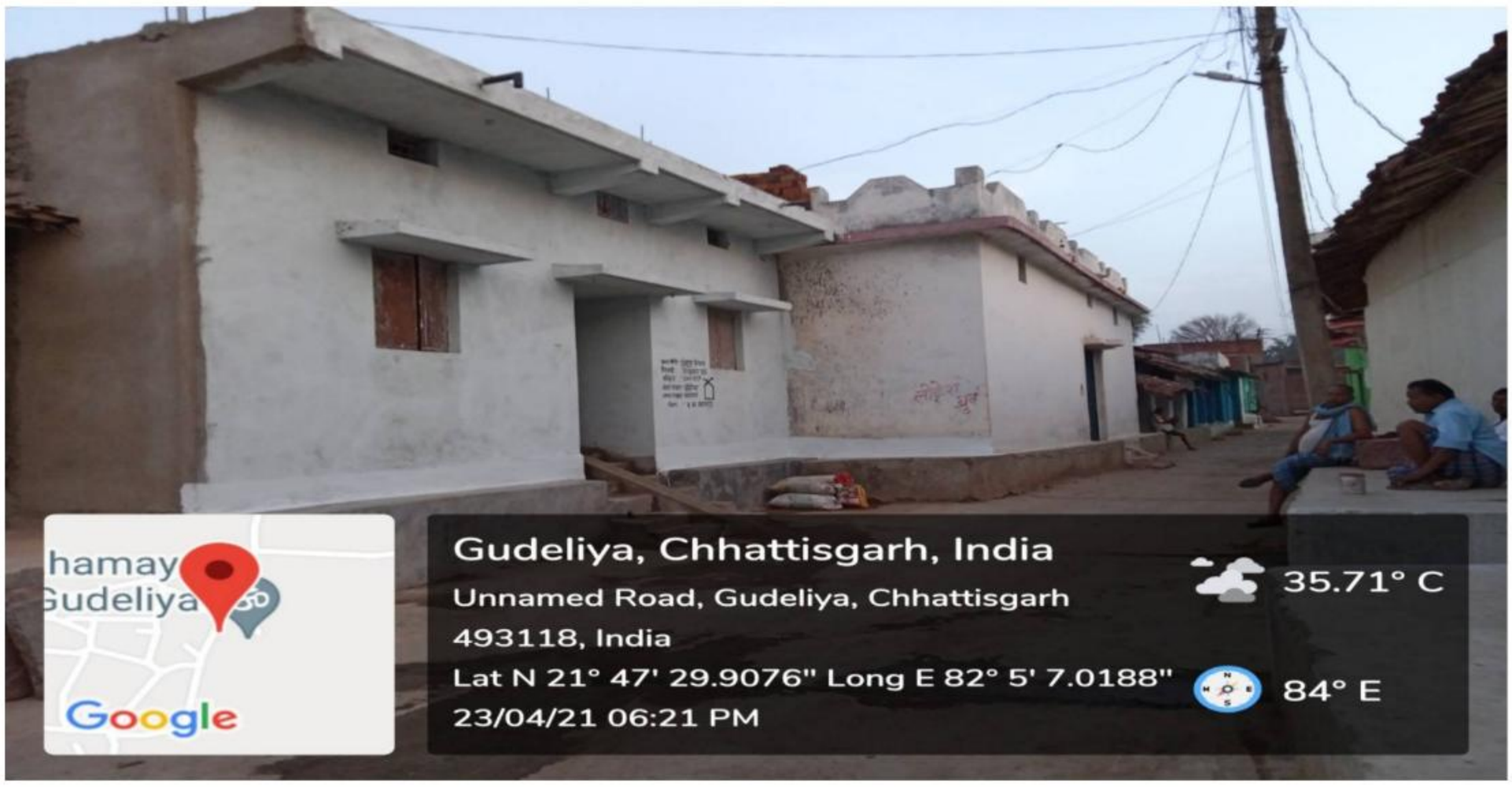

(3) मिश्रित प्रकार :–

छत्तीसगढ़ में प्रायः गावों में और कस्बों में देखा जाता हैं कि मकाने प्रायः दो भागों में विभक्त मिलती है। नया तथा पुराना इसमें होता यह है कि जब पुराने मकान को नया मकान बनाया जाता हैं। इस प्रकार में रखा जाता हैं। सर्वेक्षित ग्राम में 240 मकान मिश्रित प्रकार के हैं।

मिश्रित प्रकार का आवास

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

जिन उद्देश्य से गृहों का निर्माण किया जाता हैं, उनमें प्रमुख निम्नांकित हैं–

(1) **निवास के लिए** – शरीर को विश्राम देने के लिए प्रत्येक मनुष्य को किसी आश्रय की आवश्यकता होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति तथा परिवार को निवास तथा विश्राम के लिए गृह एक अनिवार्य आवश्यकता हैं जिसकी पूर्ति के लिए आर्थिक एवं सामाजिक स्तर के अनुसार गृहों का निर्माण किया जाता हैं।

(2) सुरक्षा के लिए – सर्दी, गर्मी, धूप, वर्षा, हिमपात आदि प्राकृतिक घटनाओं तथा हिंसक जंगली पशुओ, चोर–लुटेरों एवं शत्रुओं आदि से सुरक्षा के लिए गृहों का निर्माण एवं प्रयोग किया जाता हैं।

(3) वस्तुओं के संग्रह के लिए – वस्तुओं, सम्पत्तियों, कृषि उपकरणों एवं उत्पादनों के संग्रह (भण्डारण) के लिए तथा पशुओं को बांधने के लिए गृह बनाये जाते हैं जो आवश्यकतानुसार विविध आकार–प्रकार के होते हैं।

(4) कार्यो को सम्पन्न करने के लिए –

विभिन्न प्रकार के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि कार्यो को पूरा करने के लिए गृहों की आवश्यकता होती हैं। इस हेतु कार्यशाला (work shop), कार्यालय, दूकान, गोदाम, विद्यालय, न्यायालय (पंचायत घर), आदि के रुप में निर्माण किया जाता हैं। धार्मिक कार्यो के लिए मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा आदि धार्मिक स्थलों (भवनों) का निर्माण किया जाता हैं।

ग्राम गुड़ेलिया में आवास में उपलब्ध विशेषताएँ

स्त्रोत – प्राथमिक आंकड़े

क्रमांक	विशेषताएँ	आवासो में उपलब्ध
01	शौचालय	401
02	जल की व्यवस्था	353
03	स्नानगृह	162
04	पशु एवं संयुक्त आवास	103
05	कोठा	70

Scanned by TapScanner

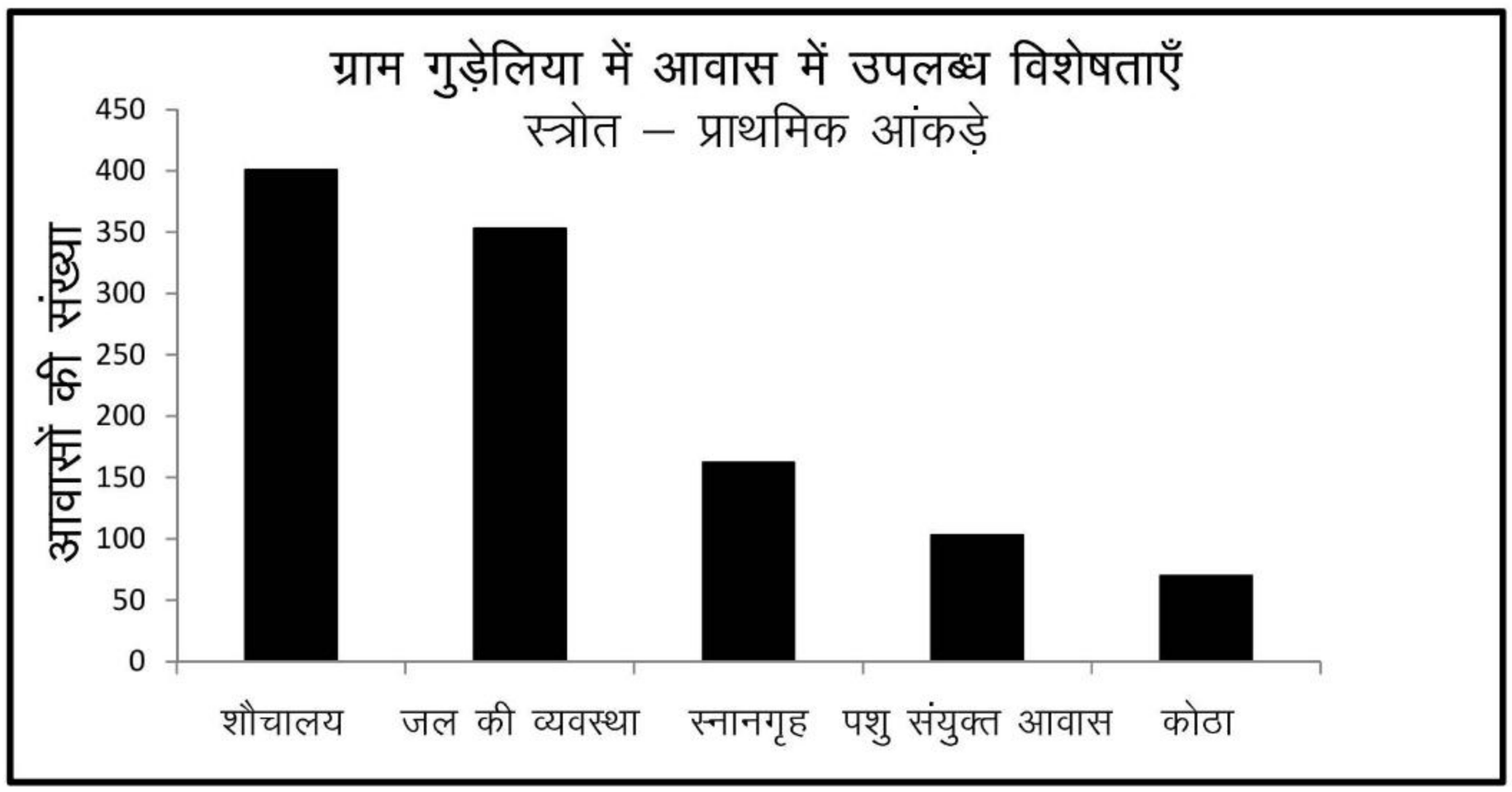

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में आवासों में कमरों की संख्या

स्त्रोत – प्राथमिक आंकड़े

कमरे	1	2	3	4	5	6 से अधिक
घरो में उपल्बध	5	13	154	164	41	26

मकानों में कमरो का महत्व :– आवासी गृह में सयन कक्ष अति महत्वपूर्ण इकाई हैं, जहा मनुष्य रात्रि में अराम करने के लिए उपयोग करता हैं। जहा सयन हेतु बिस्तर, टी.वी., कुलर, आलमारी, फ्रिज, अध्ययन सामाग्री इत्यादि वस्तु रखते हैं।

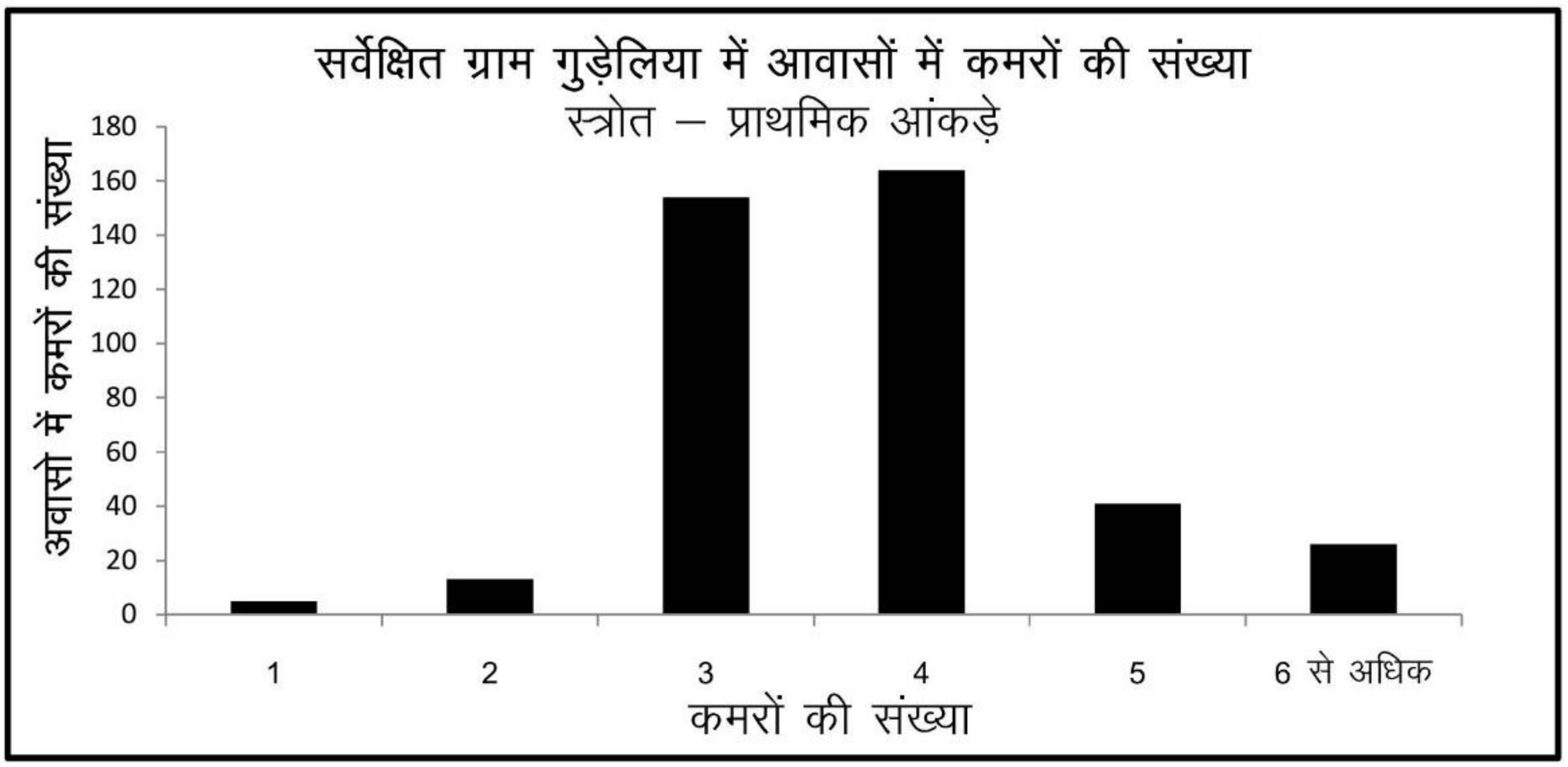

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में कुल भूमि 1858.8 एकड़ भूमि हैं, जिसमें गांव खेत–खलिहान इत्यादि हैं।

(1) गांव :– यह सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया एक संघन बस्ती हैं यह संघन बस्ती कुल 126 एकड़ भूमि में बसा हैं, इस गांव के चारों ओर तालाब हैं जो कुल 87 एकड़ भूमि में हैं इस गांव में अन्य भूमि भी हैं, जो इस प्रकार हैं। मूक्तिधाम (कब्रिस्तान) 19 एकड़, गौठान 7 एकड़, सरकारी भवन जैसे :– स्कूल, आंगनबाडी, सामाजिक भवन, महामाया मन्दिर, गायत्री मन्दिर एवं अनेक मन्दिरे, राशन दुकान, खाद गोदाम, इत्यादि 6.8 एकड़ तथा सड़क परिवहन 24 एकड़ भूमि में हैं। जो कुल मिलाकर 217.8 एकड़ भूमि हैं।

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया का संघन बस्तियाँ एवं सड़क मार्ग का गुगल मानचित्र

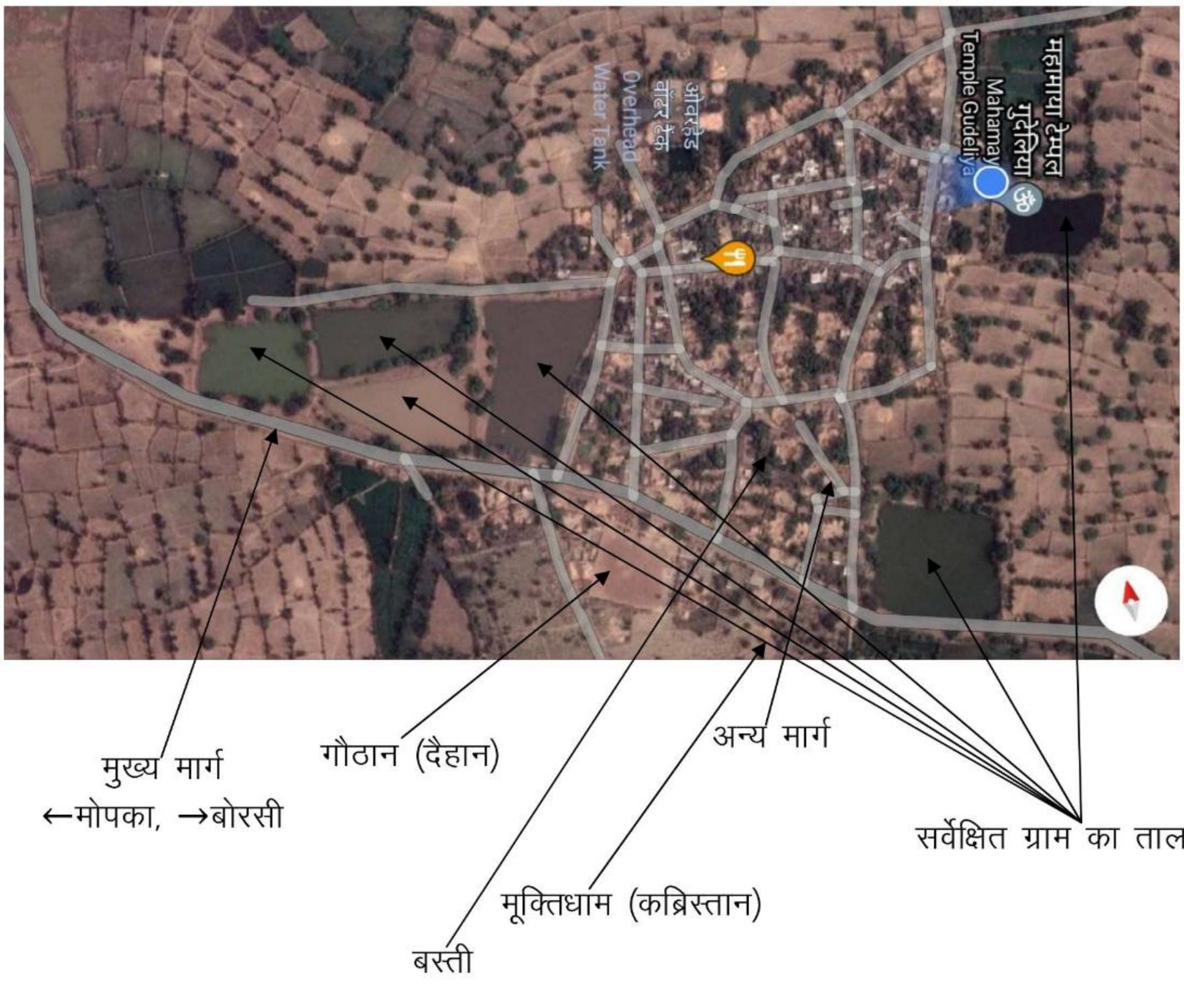

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

(2) चारागाह भूमि :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में चारागाह भूमि 110 एकड़ भूमि हैं। यह भूमि गांव के आस – पास एवं गांव से लेकर गांव के सीमा तक फैला हुआ हैं, जिसमें राऊत के द्वारा जानवरो को चराया जाता हैं। जैसे :– गाय–बैल, भैसा–भैसी, बकरा–बकरी आदि आते हैं।

(3) कृषि भूमि एवं नहर :– इस गांव में कृषि भूमि 1450 एकड़ हैं, परन्तु यहा के लोग उससे जादा कृषि करते हैं। इस गांव में मटासी एवं कन्हार भूमि पाया जाता हैं इस गांव में सिंचाई योग्य तालाब एवं नहरे भी हैं जो पुरे गांव की भूमि को सिंचकर अकाल जैसा आपदाओं से गांव को बचा सकता हैं। अर्थात् सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में नहर 29 एकड़ भूमि में फैला हैं, जिससे गांव के 65% प्रतिशत कृषि भूमि में नहर के पानी द्वारा सिंचाई किया जा सकता हैं।

ग्राम गुड़ेलिया में भूमि उपयोग

स्त्रोत – प्राथमिक आंकड़े

क्रमांक	ग्राम गुड़ेलिया का भूमि	एकड़	भूमि उपयोग
01	कृषि भूमि	1450	280.82
02	बस्ती भूमि	126	24.40
03	चारागाह भूमि	110	21.30
04	तालाब भूमि	87	16.84
05	नहर भूमि	29	5.61
06	मुख्य मार्ग एवं अन्य मार्ग	24	4.64
07	मूक्तिधाम (कब्रिस्तान)	19	3.67
08	गौठान (दैहान) भूमि	7	1.35
09	सरकारी भवन	6.8	1.31

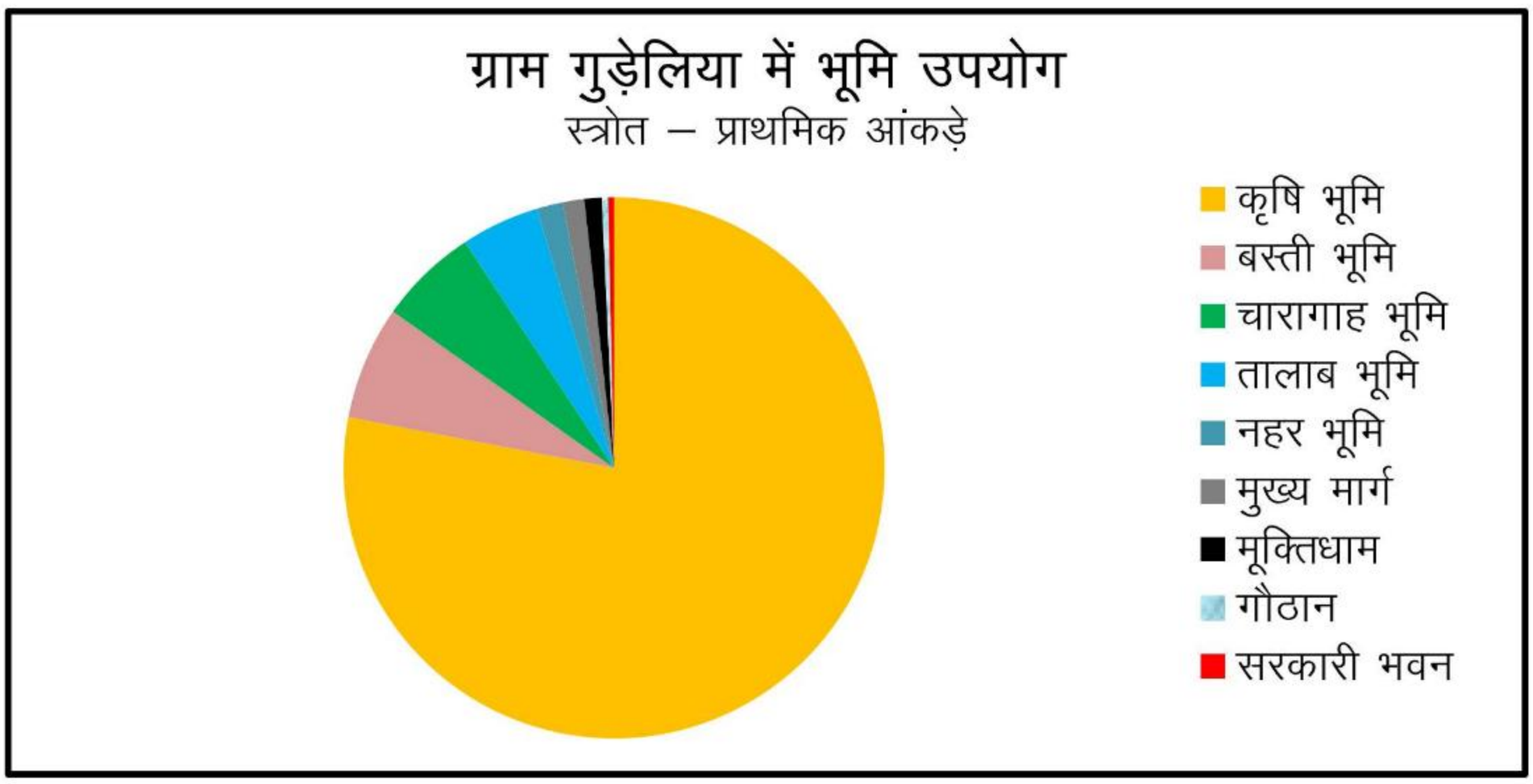

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

परिवाहन एवं संचार

ग्राम गुड़ेलिया में परिवाहन का मुख्य साधन मोटर–गाड़ी, कार, मोटर साइकिल (बाइक), बैलगाडी, साइकिल व बस हैं। इस प्रकार मोटर साइकिल तथा बस के माध्यम से यहां के लोग भाटापारा जो कि एक नगर हैं वहां अस्पताल घरेंलु वस्तु खरीदारी एवं जरुरत समान के लिए आना जाना करते हैं। ग्राम गुड़ेलिया में 98% प्रतिशत लोगो के घरों में मोटर साइकिल (बाइक) हैं।

ग्राम गुड़ेलिया में संचार हेतु मुख्यत : सभी के घरों में मोबाइल एवं स्मार्ट फोन हैं, लगभग अधिकतम घरों में डिस.टी.बी. एवं टी.बी. कम्प्यूटर आदि प्रमुख चीजें हैं, जों न्यूज एवं अन्य सेवाएं प्रदान करते हैं।

Scanned by TapScanner

अध्याय - चौथा

सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशायें

(1) जातीय संरचना :–

प्रत्येक समाज के कुछ सैध्दान्तिक तथा संस्थागत आधार होता हैं। इन्ही आधारों पर किसी देश की संस्कृति की पहचान बनती हैं। तथा उनकी प्राचीन एवं विशेषताओं को परखा जा सकता हैं। हिन्दू बहुल जनसंख्या वाले भारतीय समाज के भी अपने कुछ वैचारिक तथा संस्थागत आधार हैं। यद्यपि विदेशी संस्कृतियों प्रजातियों आदि के समिक्षण से उनकी प्रमुख एवं महत्व में कभी–कभी कमी आई हैं। फिर भी परम्परागात रुप से उन्हें भी भारतीय समाज की संरचना के आधार के रुप में निरुपित किया जाता हैं।

(1) वर्ण व्यवस्था :– जाति एवं वर्ण भारतीय सामाजिक संगठन के दो महत्वपूर्ण तत्व हैं। यद्यपि कई बार दोनों को एक समझा जाता हैं। भारत की मूलभूत सामाजिक व्यवस्था वास्तव में वर्ण व्यवस्था ही थी, जाति व्यवस्था नहीं थी।

(2) जाति–व्यवस्था :– जाति वर्ण व्यवस्था के बाद की उपज हैं। यह भी कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि वर्ण व्यवस्था में उत्पन्न विकृति का परिणाम जाति प्रथा हैं। संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो वर्ण केवल चार ही हैं। जबकि जातीया हजारों हैं, जाति व्यवस्था जैसा कठोरता वर्ण व्यवस्था में नही थी। जाति तथा वर्ण प्रारम्भ से कर्म मुलक बनती चली गई। भारतीय समाज में जातियों के बीच पारस्परिक सामाजिक व्यवहार सम्बन्ध प्रारम्भ से ही निषिध्द रहे हैं।

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में 12 प्रकार की जातीया देखने को मिली हैं। ग्राम गुड़ेलिया में जातीय व्यवस्था होने के कारण अर्न्तजाति विवाह अमान्य हैं।

(3) विवाह :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में विवाह समान्यत 18–21 वर्ष के मध्य सबसे अधिक होता हैं। तथा अर्न्तजाति विवाह वहां के समाज में अमान्य हैं। ऐसा करने पर दण्ड का प्रावधान निश्चित किया गया हैं।

(2) सांस्कृतिक दशायें :–

ग्राम गुड़ेलिया में हिन्दू समाज रहता हैं। जिस कारण उनके सांस्कृतिक दशाओं में पूजा, यज्ञ, होली, दिपावली, रामनवमी, दशहरा, हरेली, छरछेरा, गणेश उत्सव, नवरात्रि पर्व, जन्माष्टमी, महाशिव रात्रि, कार्तिक पूर्णिमा, गायत्री यज्ञ, सावनाही रामायण, जुड़वास, मंकर संक्रान्ति, बसन्त पंचमी, रक्षा बन्धन, तीजा पोरा, गणतन्त्र एवं स्वतन्त्रता दिवस, आदि हिन्दू सांस्कृतिक पर्व मनाये जाते हैं।

Scanned by TapScanner

(1) आदर्श होली :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में आदर्श होली मनाया जाता हैं, इस ग्राम में किसी भी प्रकार के वस्तु को होली में जलाने के लिए चोरी नही किया जाता हैं। होली दहन के दिन सर्वेक्षित ग्राम के लोग अपने–अपने घरों के सामने लकड़ी, छेना (कंड़ा) इत्यादि रख दिया जाता हैं। जिसको गांव के बच्चे एवं युवा लोग रात्रि में उठाकर ले जाते हैं और होलीका माता में ड़ाल देते हैं। इस गांव में गाली गलौज एवं कड़वा शब्दो का प्रयोग नहीं किया जाता हैं। होलीका दहन के दिन होलीका माता से 8–10 कदम दुर में पन्डाल लगाकर उसमें नरसिंहा भगवान का स्थापना किया जाता हैं, इस गांव में महिलाए सुबह स्नान ध्यान करके अपने–अपने घरों से पूजा की थाली सजाकर होलीका माता के पास जा कर उसकी आरती (पूजा) करके होलीका माता का चारों ओर चक्र लगाकर नरसिंहा भगवान का पूजा किया जाता हैं। उसके बाद गांव में रंग–गुलाल का महोल शुरु हो जाता हैं। और महिलाए अपने–अपने घरों में रोटी एवं मिट्ाईया बनाने की तैयारी करती हैं गांव के लोग नगारा एवं बाजा–गाजा के साथ गांव में हर घर के सामने नाच गाना किया जाता हैं, और शाम को नरसिंहा भगवान को डि.जे के साथ तालाब में विसर्जन के लिए प्रास्थान किया जाता हैं। उसके बाद गुलालो से होली खेला जाता हैं, अर्थात् अपने–अपने परिवार के लोगो को खाने के लिए बुलाए जाते हैं।

होलीका माता एवं नरसिंहा भगवान का चित्र

(2) दिपावली :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में दिपावली पर्व बड़े धुम धाम से मनाया जाता हैं जिसमें घर–घर जाकर दिप जलाया जाता हैं इस ग्राम में विशेष रुप से लक्ष्मी पूजा किया जाता है, लक्ष्मी पूजा मुहूर्त समय देखकर उचित समय में एवं पूजा के बाद बड़ा सा कोपरा में एक कोपरा प्रसाद लेकर घर–घर वितरण करने के लिए जाते हैं। तथा यहां

Scanned by TapScanner

गौरा–गौरी के लिए गांव के बाहर चुर्माटी के लिये जाते हैं और उस मिट्टी का गौरा गौरी बनाया जाता हैं एवं बैगा–बैगीन रात्रि में गौरा का बरात के रुप में गांव में घुमाया जाता हैं और गौरी को विवाह कर ले जाता हैं, बैगा–बैगीन गौरा चौरा में गौरा–गौरी को बैठा देते हैं और रात भर गौरा–गौरी गीत गाकर सेवा करते हैं तथा सुबह होते ही गांव के महिलाए स्नान कर नई कपड़े पहन कर अपने घरों से पूजा की थाली लेकर पूजा करने के लिए जाते हैं एवं समय देख कर गौरा–गौरी को विसर्जन के लिये तालाब की ओर ले जाते हैं। शाम होते ही गोवर्धन पूजा की तैयारी प्रारम्भ हो जाता हैं जिसमें गोबर का गोवर्धन बनाकर उसके बीच में छोटा सा मट्का रखा जाता हैं जिसे गौ माता के पैरो से खुन्दाया जाता हैं। एवं इस गांव में प्रतिवर्ष गोवर्धन पूजा के दिन रात्रि के समय पारम्परिक डी.जे. डॉन्स का आयोजन किया जाता हैं इस डॉन्स को देखने के लिये दूर–दूर के गांव के लोग आते थे। जो पिछले दो वर्षो से झगडा–लड़ाई के कारण नहीं हूवा हैं। अतः सर्वेक्षित ग्राम में 5–6 दिनो तक फटाको का माहोल रहता हैं, यहा के लोग फटाको में हद से जादा पैसा खर्च करते हैं। दीपावली तैहार में सुआ, राउत जैसे नृत्य देखने को मिलता हैं।

(3) लोक नृत्य :– सर्वेक्षित ग्राम में मुख्यतः सुआ, कर्मा, राऊत, आदि नृत्य विभिन्न त्यौहारों के दिनों में विशेष रुप से देखने को मिलता हैं।

(4) सवनाही रामायाण :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में प्रति वर्ष सावन माह में महामाया मन्दिर में पुरे एक महा के लिए सवनाही रामायाण आयोजित किया जाता हैं यहां के लोग रामायाण को सावन माह के पहले दिन से शाम 5.00 से रात्रि 10.00 बजे तक प्रति दिन एक माह के लिए करते हैं, फिलहाल यहां के लोग रामायाण में कोई रुचि नही दिखाते हैं एवं महामाया चौक के छोटे–छोटे बच्चे अपने–अपने घरों से आरती की थाल लेकर जाते हैं, तथा सावन माह के आखरी दिन रामायाण 24 घंटो तक चलता हैं, एवं दूसरे गांव से रामायाण कलाकार (रामायाण प्रेमी) आते हैं।

(5) गायत्री यज्ञ :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में प्रति वर्ष 51 घरों में गायत्री यज्ञ किया जाता हैं, सुबह 9.00 बजे से शाम 4.00 बजे तक यह पूजा उन इच्छुक लोगो के घरों में अर्थात् जो अपने घरों में कराना चाहते हैं उन लोगो के घरों में किया जाता हैं। यह पूजा (यज्ञ) गायत्री परिवार के लोगो के माध्यम से किया जाता हैं, पूजा का आधे सामग्री गायत्री परिवार के लोग देते हैं एवं आधे समाग्री घर वाले का होता हैं। अतः इस गांव में सार्वजनिक गायत्री यज्ञ किया जाता हैं जिसमें हरिद्वार से गायत्री परिवार के बडे–बडे लोग सम्लित होने के लिए आते हैं।

(6) नामिव्यक्ति का आगमन :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में अनेक प्रकार के नामिव्यक्ति का आगमन हो चुका हैं, जैसे भूतपूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिहं अपने हैलिकाप्टर के साथ 2009 में, छत्तीसगढ़ लोक गॉयिका मोना सेन 2009 में, योगगुरु रामदेव बाबा 2011 में जो भारत में

Scanned by TapScanner

स्वदेशी वस्तु का जन्मदाता माने जाते हैं जैसे कि पतंजलि उत्पाद इस प्रकार के नामिव्यक्ति सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में आये थे,

(7) सार्वजनिक स्थान :– सर्वेक्षित ग्राम में विभिन्न प्रकार के सार्वजनिक भवन साहू भवन, गोंड भवन, यादव भवन, मानिकपुरी भवन, भारत भवन जहां पंचायत समबन्धित कार्य किया जाता हैं, सरकारी राशन दुकान भवन, नृत्य भवन, रामायण चौरा, दूर्गा मंदिर, राम मंदिर, महामाया मंदिर, शनिदेव चौरा, गार्ड़न जैसे स्कूल भवन, गौठान, तालाब, इत्यादि स्थान देखने को मिलता हैं।

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में सार्वजनिक स्थान के निम्न भवन

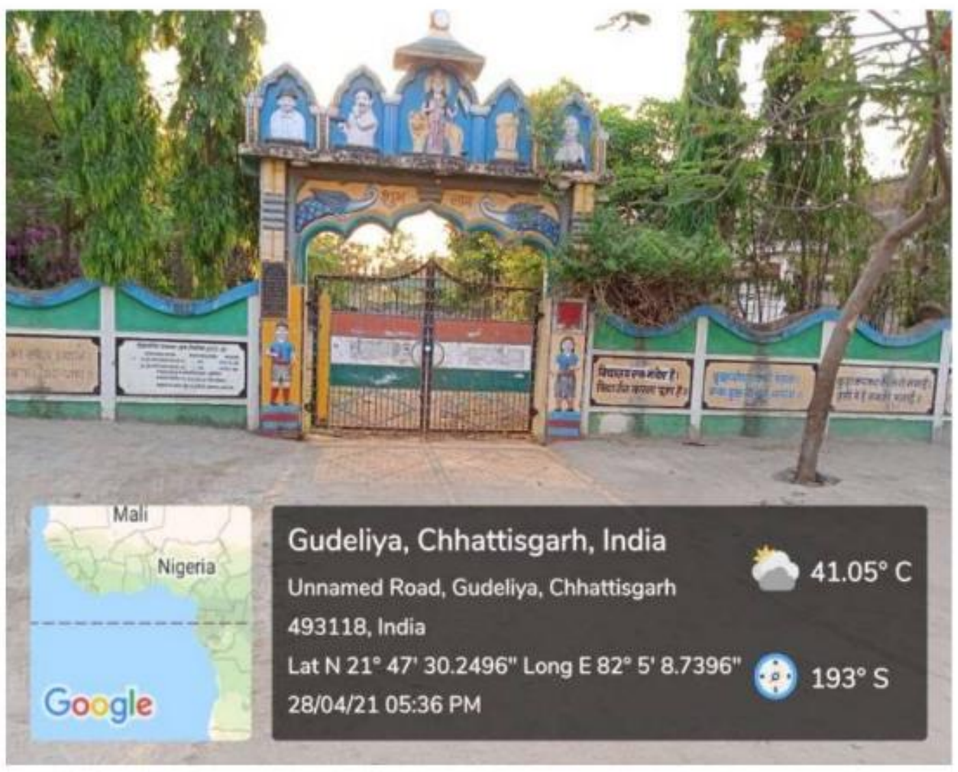

स्कूल भवन

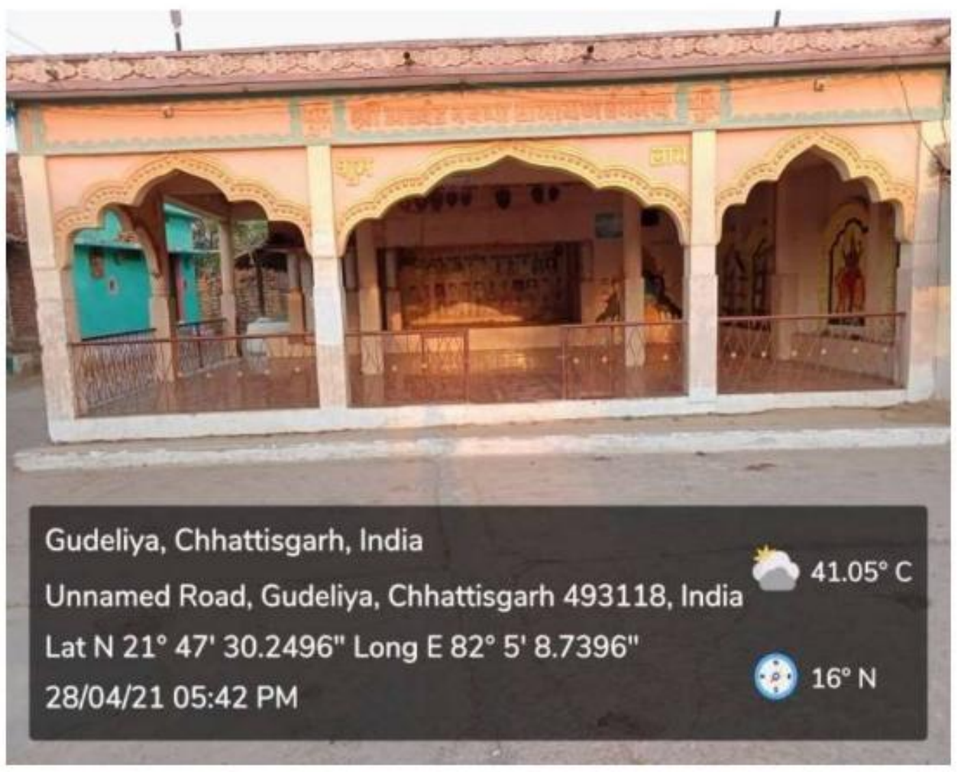

रामायण चौक भवन

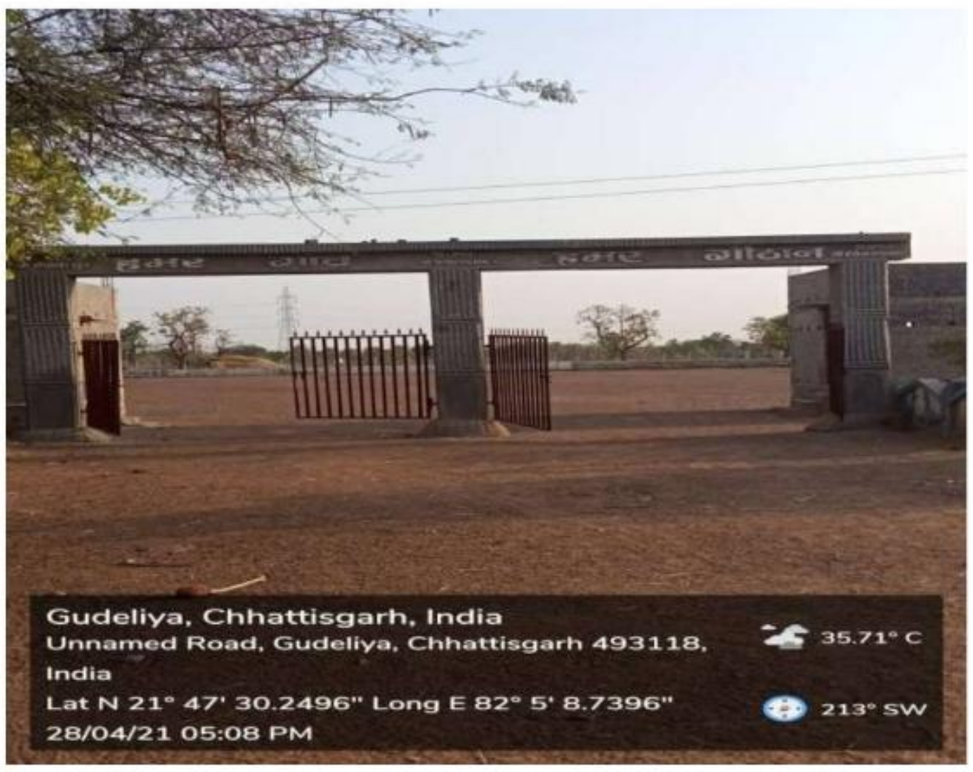

गौठान

सरकारी राशन दुकान

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

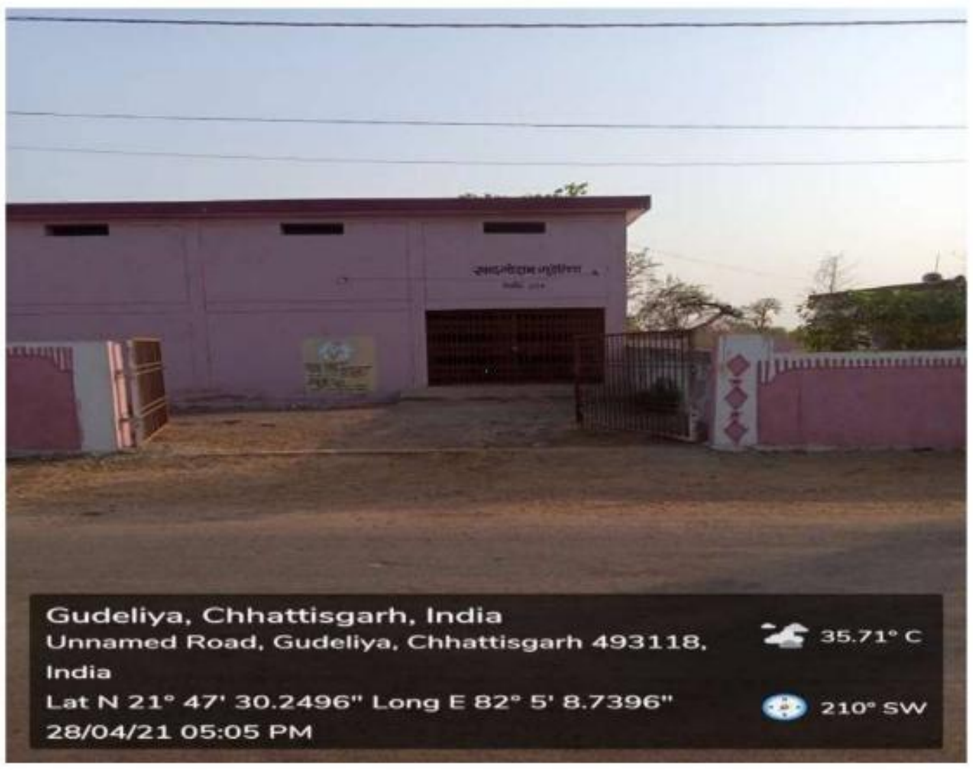

खाद गोदाम

गायत्री मन्दिर

महामाया मंदिर

राम मंदिर

मुख्य प्रवेश द्वार

बाजार चौक

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

भारत भवन (पंचायती कार्यलाय)

मुक्तिधाम (कब्रिस्तान)

शनिदेव मन्दिर

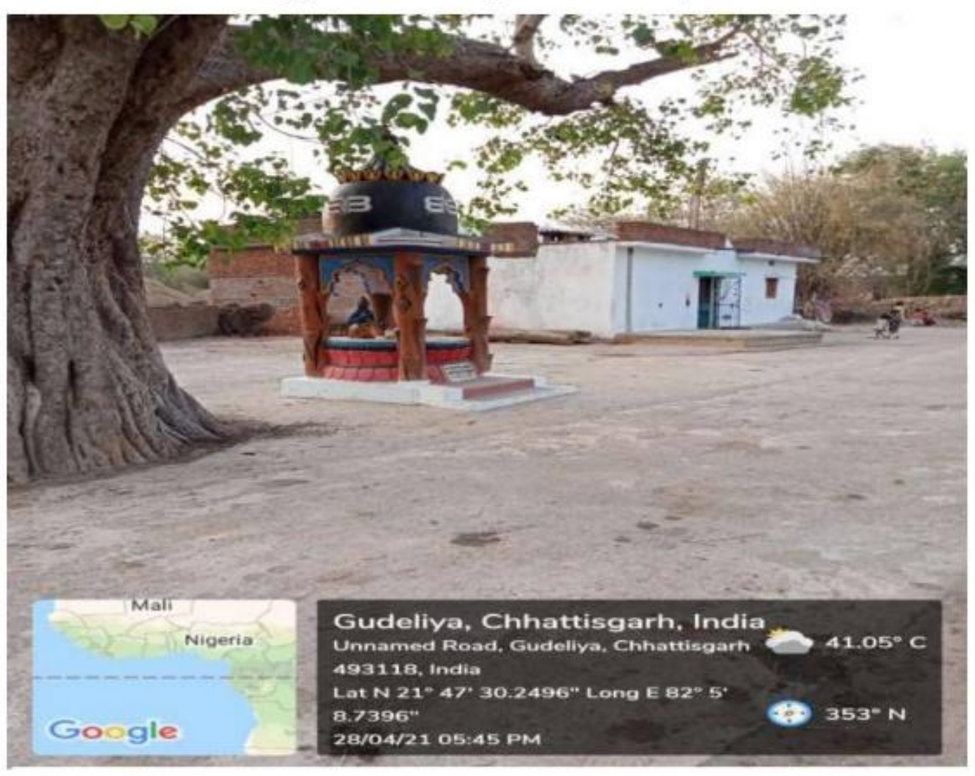

साहाड़ देव

गौरा–गौरी चौरा

हनुमान मन्दिर

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

अध्याय - पांचवॉ

मानव व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति

ग्राम गुड़ेलिया की आर्थिक स्थिति मुख्यतः कृषि पर टिका हुआ हैं यहां के लोग लगभग 98% मुख्यतः कृषि करते हैं। व्यवसाय वह आर्थिक क्रिया हैं जिससे कोई व्यक्ति अपनी जीविका अर्जित करता हैं। सभी आर्थिक क्रियाए व्यवसाय के अंतर्गत समाहित होती हैं। प्राकृतिक वस्तुओं का एकत्रण, आखेट, पशुचारण, मत्स्य, ग्रहण, लकड़ी काटना (वनोद्योग), कृषि, खनन, उद्योग, परिवहन, वाणिज्य एवं व्यापार, सेवाए आदि प्रमुख मानव व्यवसाय हैं। इस प्रकार, व्यवसाय व्यक्ति की आर्थिक आय का सामान्यतः स्थायी स्त्रोत होता हैं और उसके द्वारा व्यक्ति के समाजिक स्थिति का निर्धारण होता हैं। मानव सभ्यता के आरम्भ (आदिकाल) से लेकर मनुष्य आर्थिक क्रियाओं का संचालन विभिन्न रुपो में करता रहा हैं क्योंकि मानव जीवन की निश्चित आवश्यकताए इतनी सार्वभौमिक और समतापूर्ण हैं कि उनकी पूर्ण पूर्ति अवश्य होनी चाहिए और वे अधुरे संतुष्टि को स्वीकार नही करती हैं।

व्यवसायों का वर्गीकरण

वे समस्त आर्थिक क्रियाएं जिसमें मनुष्य को आय प्राप्त होती हैं, व्यवसाय के अंतर्गत सम्मिलित की जाती हैं। समस्त आर्थिक क्रियाओं या व्यवसायों को प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक आदि वर्गो में विभक्त किया जाता हैं–

(1) **प्राथमिक व्यवसाय (primary occupation)** :– वे व्यवसाय जिसके द्वारा प्रकृति या भूमि से प्रत्यक्ष रुप से उत्पादन प्राप्त करतें हैं, प्राथमिक व्यवसाय कहलाते हैं। ऐसे उत्पादनों को प्राथमिक उत्पादन कहते हैं। आखेट, मत्स्य, ग्रहण (मछली पकडना), वन्य वस्तुओं को एकत्रित करना, पशुचारण एवं पशुपालन, लकडी काटना, कृषि, खनन आदि प्राथमिक व्यवसाय के अंतर्गत आते हैं।

(2) **द्वितीयक व्यवसाय (secondary occupation)** :– जिन आर्थिक क्रियाओं में प्राथमिक उत्पादनों का प्रयोग करके नवीन वस्तुओं का उत्पादन किया जाता हैं उसे द्वितीयक व्यवसाय कहते हैं। विनिर्माण उद्योग, निर्माण कार्य (गृह निर्माण आदि) इनके अन्तर्गत आते हैं।

(3) **तृतीयक व्यवसाय (tertiary occupation)** :– इसके अंतर्गत उन आर्थिक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता हैं जिनके द्वारा प्रत्यक्ष रुप से कोई उत्पादन नहीं होता किन्तु उत्पादन में वे परोक्ष रुप से सहायक होते हैं। परिवहन, संचार, वाणिज्य, व्यापार तथा विभिन्न सेवाएं यथा शिक्षा प्रशासन, चिकित्सा, मनोरजन, प्रतिरक्षा, आदि इसके उदाहरण हैं।

Scanned by TapScanner

(4) चतुर्थक व्यवसाय (quaternary occupation) :– वर्तमान काल में विज्ञान, कला, साहित्य, प्रौद्योगिकी, शोध आदि उच्च सेवाओं को चतुर्थक व्यवसाय की श्रेणी में रखा जाता हैं।

उत्पादन की विधि तथा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी (तकनीक) के अनुसार सम्पूर्ण आर्थिक क्रियाओं या व्यवसायों को दो बृहत् वर्गो में विभक्त किया जा सकता हैं– (1) आदिम या प्रारम्भिक व्यवसाय, और (2) आधुनिक व्यवसाय।

व्यावसायिक संरचना

ग्राम गुड़ेलिया के व्यावसायिक प्रतिरुप

(1) प्राथमिक व्यवसाय – लगभग 350 परिवार

(2) द्वितीयक व्यवसाय – लगभग 104 परिवार

(3) तृतीयक व्यवसाय – लगभग 13 परिवार

(4) चतुर्थक व्यवसाय – लगभग 15 परिवार

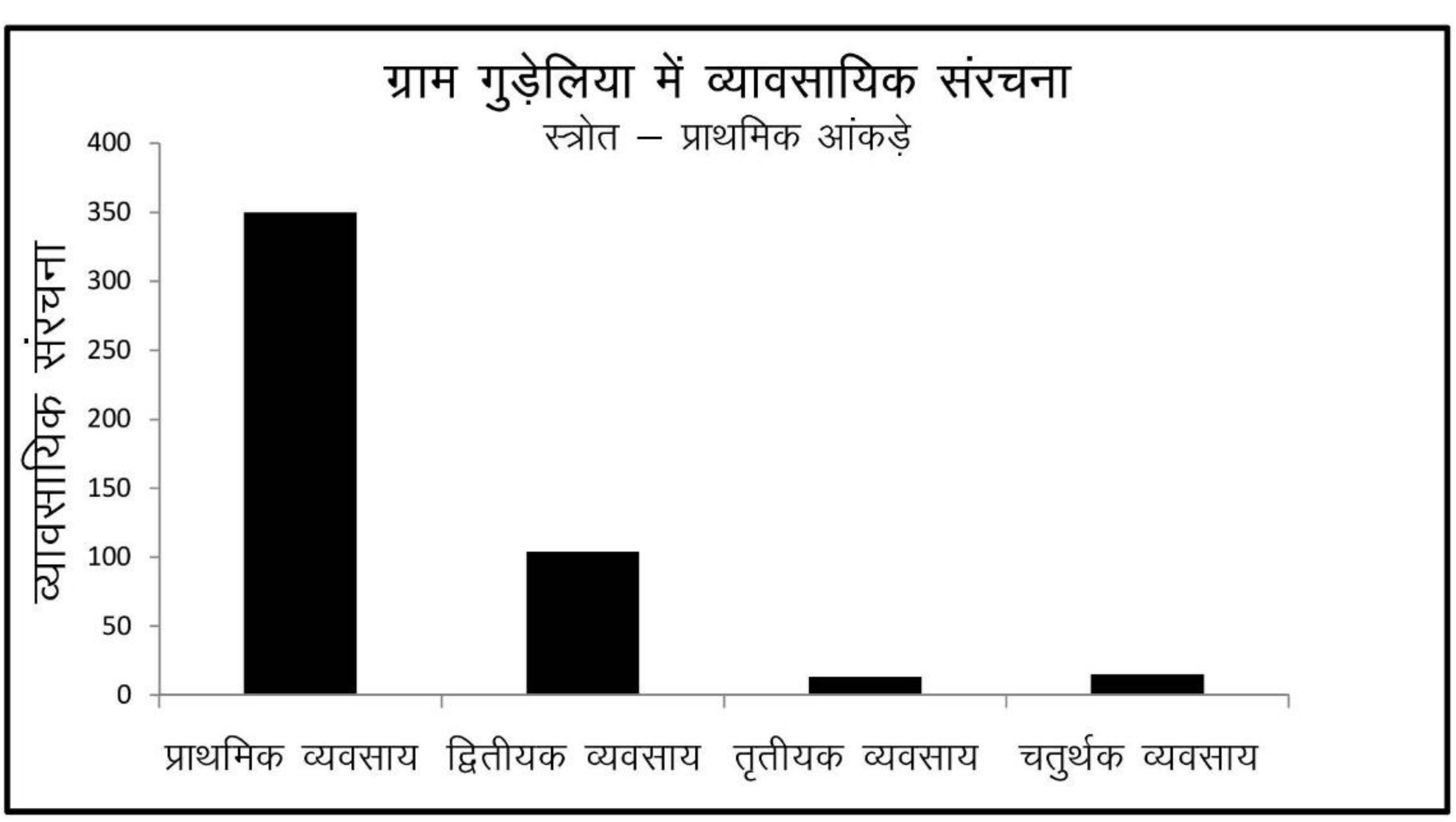

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

आर्थिक स्थिति

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया विकास के राह पर तेजि से बड़ रहा हैं इस गांव को सरकार प्रतिवर्ष लाखो रुपये गांव के विकास के लिए योगदान देते हैं, इस गांव का 15–20 एकड़ भूमि को एक स्थानीय कलेसर कम्पनी को खंनन कार्य हेतु लिज में दिया हैं जो प्रतिवर्ष 10–15 लाख रुपये ग्राम पंचायत में वार्षिक कर जमा करते हैं। सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में आय का बहुत सा साधन हैं, जैसे की टैक्टर माल स्पलाई के लिए उपयोग किया जाता हैं इस ग्राम में 40–42 टैक्टर हैं। मकान ठेकादार मकान निर्माण के लिये लाखो रुपये में मकान ठेका लेते हैं जिस कारण इस गांव के लोगो को मकान निर्माण कार्य में मजदूर के रुप में 2–3 माह के लिए रोजगार मिल जाता हैं। सरकारी काम का ठेकादार इस गांव में संकेत अग्रवाल बहुत बड़ा ठेकादार हैं जो विकासखण्ड भाटापारा का बहुत सारे गांव का सरकारी कार्य गांव का विकास करने का टेन्डार लेते हैं उसके द्वारा इस गांव के आधे से जादा लोगो को रोजगार मिलता हैं। सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में आर्थिक स्थिति मध्यम हैं परन्तु अधिक मात्र में नशा करने के कारण यहा के लोग जादा पढ़े लिखे नही हैं। अर्थात् इस गांव के बच्चे से बुजुर्ग तक एवं महिलाये भी अधिक मात्र में नशा करते हैं इस गांव में काम करने का बहुत सा साधन हैं इस कारण से गांव के 13 वर्ष से अधिक उम्र वाले बच्चे रोजगार पा जाता हैं जिस कारण अपना पढ़ना लिखना छोड़ देते हैं और जेब में पैसा होने के कारण नशा अधिक मात्र में करते हैं।

Scanned by TapScanner

अध्याय – छठवॉ

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में प्रमुख सम्सयाएं

अक्सर गांवओ में पेय जल, स्नान हेतु जल, रोजगार, परिवहनो, चारागाह भूमि इत्यादि सम्सयाए देखने को मिलता हैं।

(1) जल की सम्सयाए :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में पेय जल की कोई कमी नही हैं, इस गांव में 96% (प्रतिशत) लोगों के घरों में नल एवं जल की व्यवसथा हैं परन्तु इस गांव के लोगो के घरों में जल सिधा बोरवेंल के माध्यम से पहुचता हैं। वर्षा एवं गर्मी के दिनों में तेज आन्धी तुफान मौसम खराब होने के कारण बिजली कट होना या फिर खम्भे गिर जाने के कारण इस गांव में जल की सम्सयाए देखने को मिलता हैं। इस गांव में 5–7 हेन्ड पम भी हैं जो उपयोग ना होने के कारण जर–जर स्थिति में हैं। अर्थात् इस गांव में कभी–कभार 1–2 दिनों के लिए बिजली कट हो जाता हैं जिस कारण हैडपम्प के माध्यम से जल कि व्यवसथा में महिलाए एवं पुरुष लग जाते हैं। सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में एक ही हैडपम्प काम का हैं बाकी हैडपम्प में लम्बे समय तक प्रयास करने के बाद पानी निकलता हैं अतः एक ही हेन्ड पम काम में आने के कारण भिड एवं महिलाओ का मारा–मारी देखने को भी मिलता हैं।

(2) चारागाह भूमि की सम्सयाए :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में चारागाह भूमि बहुत बडी एवं मुख्य सम्सया में से एक हैं ग्राम गुड़ेलिया में चारागाह की सम्सया दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं जिस कारण इन गांव वालो को बहुत बडा कीमत चुकाना पड रहा हैं जिसका कारण निम्न हैं :–

(1) घर एवं खेत बनाने के उद्देश्य से लोग चारागाह भूमि पर तेजी से अधिग्रहण कर रहें हैं जिस कारण जानवरों को उपयुक्त चारा (भोजन) नहीं मिल पा रहा हैं जिससे जानवर मृत्यु की ओर बढ़ रहे हैं इस गांव में पिछले वर्ष लगभग 19 प्रतिशत जानवरों की मृत्यु देखने को मिला था।

(2) चारागाह भूमि ना होने के कारण इस गांव में पशु चराने के लिए राउत नही लगना चाहता हैं, जिस कारण लोग अपने – अपने जानवरों को ना पालने के उद्देश्य से बाहर अजाद छोड देते हैं।

(3) जानवर अजाद होने एवं उपयोक्त चारा नही मिलने के कारण किसानों के हरि–भरि फसलों को देखकर उस पर कुद पडते हैं, जिससे किसान का फसल बरबाद हो जाता हैं अर्थात् इस गांव में पिछले 3–4 वर्षो से उत्तेरा जैसे फसल नही लिया गया हैं इसका कारण हैं – (1) चारागाह भूमि ना होना (2) जानवर अजाद होने के कारण

Scanned by TapScanner

(4) जिस समय फसल निकलता हैं उस समय गांव के लोग फसलो को जानवरों से रक्षा करने के लिये गांव के 10–10 लोग पारी–पारी रात्रि में 10 घन्टे के लिये गांव के बाहर जाते हैं इस गांव में पिछले दो वर्षो से रखवारी किया जाता हैं।

(5) सोसाइटी में 2500 सौ क्यून्टल के लालच ने इस गांव के किसानों को चारागाह भूमि को नष्ट करके खेत बनाने के लिये मजबुर कर दिया

सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में प्रतिवर्ष पशुओ का त्याग करते हुए निम्न सारणी द्वारा देखा जा सकता हैं।

क्रमाक	वर्ष	कुल पशु	पशु त्याग	त्याग का प्रतिशत
01	2015	747		
02	2016	722		
03	2017	696		
04	2018	677		
05	2019	621		
06	2020	570		

(3) रोजगार की सम्सयाएं :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में रोजगार की सम्सया के कारण यहा के लोग फसल काट कर बेच कर दूसरे राज्यों या बढ़े शहरों में रोजगार की प्राप्ति के लिए जाते हैं, परन्तु इस गांव में साल भर ग्राम पंचायत द्वारा सरकारी काम होता रहता हैं जैसे – भवन निर्माण, संडक मार्ग निर्माण, तलाब गहरी करण इत्यादि काम पंचायतो द्वारा किया जाता हैं। इस गांव में व्यक्ति को छाट–छाट कर काम पर ले जाते हैं जिस कारण इस गांव में हर किसी व्यक्ति को रोजगार नही मिल पाते हैं। सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में एक जॉब कार्ड में एक ही व्यक्ति को काम दिया जाता हैं, चाहे उस जार्ब कार्ड में एक परिवार के कितने भी लोगो का नाम हों

(4) बिजली की सम्सयाएं :– सर्वेक्षित ग्राम गुड़ेलिया में अक्सर बिजली कट होने की सम्सयाएं देखने को मिलता हैं जिससे स्कूल, कॉलेज एवं अन्य संस्था में पढ़ने वाले बच्चों को अधिक सम्सयाओं का सामना करना पड़ता हैं। सर्वेक्षित ग्राम में बिजली कट होने के कारण एक ही ट्रांसफार्मर से आधे से जादा गांव को बिजली एवं गांव के आस–पास के कृषि फार्म को बिजली मिलता हैं जिस कारण ट्रांसफार्मर में लोड अधिक होने के कारण ट्रांसफार्मर का फ्यूज बार–बार कट हो जाता हैं यह अक्सर रात्रि समय 10.30–11.00 बजे के मध्य में होता हैं जिसे बनाने के लिए कोई नही जा पाता हैं। सुबह हम दो–चार दोस्तों के साथ मिल कर बनाने जाते हैं।

■■■

Scanned by TapScanner

अध्याय - सातवॉ

सर्वेक्षण के समय याद रखने योग्य बाते

(1) सर्वेक्षण पूर्वाग्रह से युक्त ना हों :–

सर्वेक्षण कर्ता द्वारा कोई भी सर्वेक्षण उस समय अनुपयुक्त हो जाता हैं जब सर्वेकर्ता पूर्वाग्रह (पहले से निश्चित कर रखा गाया मत) से युक्त हो अर्थात् सर्वेक्षण करता किसी जाति, समाज, धर्म के सम्बन्ध में अपने विचारों को सर्वेक्षण में थोपे ना सर्वेक्षण स्वतन्त्र विचाार के साथ किया जाना चाहिए। और सर्वेक्षण में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार ही उसका वर्णन किया जाना चाहिए।

(2) अप्रिय शब्दों का प्रयोग ना हों :–

सर्वेक्षण करते समय सरल, सुबोध तथा अच्छे (प्रिय) शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। हमें सर्वे करते समय स्थानिय (सरल) भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(3) सही फार्मेट :–

सर्वेक्षण कर्ता के प्रश्न का फार्मेट सही रहना चाहिए उसमें उट–पटांग के प्रश्न नहीं होने चाहिए जैसे :– यदि कोई सर्वेक्षण करता किसी महिला से प्रश्न करता हैं कि आपके कितने बच्चे हैं। महिला बोली – दो उसके बाद सर्वेक्षण करता को यह सवाल नहीं करना चाहिए की आपका विवाह हुआ हैं या नहीं वरना सर्वेक्षण कर्ता वही पीटा जा सकता हैं।

(4) स्थानिय परिवेश में घुल मिलजाना :–

एक सर्वेक्षण कर्ता में यह गुण होना चाहिए की वह स्थानिय परिवेश में घुल मिल जाये जिससें सर्वेक्षण सरल तथा उचित हो पायेगा

ग्राम गुड़ेलिया में सर्वे करते समय लिए गये फोटो

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

■■■

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

अध्याय आठवॉ

जल संरक्षण

जल का महत्व :–

मनुष्य के लिए जल बहुत महत्वपूर्ण हैं। बिना भोजन किए मनुष्य 7 दिनों तक जीवीत रह सकता हैं पर बिना जल पिए वह 3 दिन में ही मर जाएगा। हम सभी लोंगों को प्यास लगती हैं औंर प्यास बुझाने के लिए जल का प्रयोग करते हैं। स्वस्थ रहने के लिए एक व्यक्ति को प्रतिदिन कम से कम 2 से 3 लीटर पानी का सेवन करना चाहिए। प्यास लगने पर जब पानी नही मिलता हैं तो बडी बेचैनी अनुभव होता हैं। इससे ही जल का महत्व पता चलता हैं।

जल ही जीवन हैं। हमें जल का संरक्षण करना चाहिए क्योंकि पृथ्वी से जल तेजी से विलुप्त हो रहा हैं। मनुष्य की व्यवसायिक गतिविधियों ने आज पीने लायक जल को संकट में डाल दिया हैं। बडी–बडी फैक्ट्रियों द्वारा प्रदूषण फैलाया जा रहा हैं। रासायनिक कचरे को नदियों झीलों तालाबों में बहाया जा रहा हैं जिससे जल दुषित हो रहा हैं। इसे रोकने के लिए मजबूत कदम उठाने होंगें।

वर्षा जल संग्रहण

वर्षा के जल को किसी खास माध्यम से संचय करने या इकट्ठा करने की प्रक्रिया को वर्षा जल संग्रहण (वाटर हार्वेस्टिंग) कहा जाता हैं। विश्व भर में पेयजल की कमी एक संकट बनती जा रही हैं। इसका कारण पृथ्वी के जलस्तर का लगातार नीचे जाना भी हैं। इसके लिये अधिशेष मानसून अपवाह जो बहकर सागर में मिल जाता हैं। उसका संचयन और पुनर्भरण किया जाना आवश्यक हैं, ताकि भूजल संसाधनों का संवर्धन हो पाये। अकेले भारत में हीं व्यवहार्य भूजल भण्डारण का आकलन 214 बिलियन घन मी. (बीसीएम) के रुप में किया गया हैं जिसमें से 160 बीसीएम की पुनः प्राप्ति हो सकती हैं। इस समस्या का एक समाधान जल संचयन हैं। पशुओं के पीने के पानी की उपलब्धता, फसलों की सिंचाई के विकल्प के रुप में जल संचयन प्रणली को विश्वव्यापी तौर पर अपनाया जा रहा हैं। जल संचयन प्रणाली उन स्थानों के लिए उचित हैं, जहां प्रतिवर्ष 200 मि.मी वर्षा होती हो। इस प्रणाली का खर्च 400 वर्ग इकाई में नया घर बनाते समय लगभग से बाहर से पंद्रह सौ रुपए मात्र तक आता हैं।

जल संचयन में घर की छतों स्थानीय कार्यालयों की छतों या फिर विशेष रुप से बनाए गए क्षेत्र से वर्षा को एकत्रित किया जाता हैं।

Scanned by TapScanner

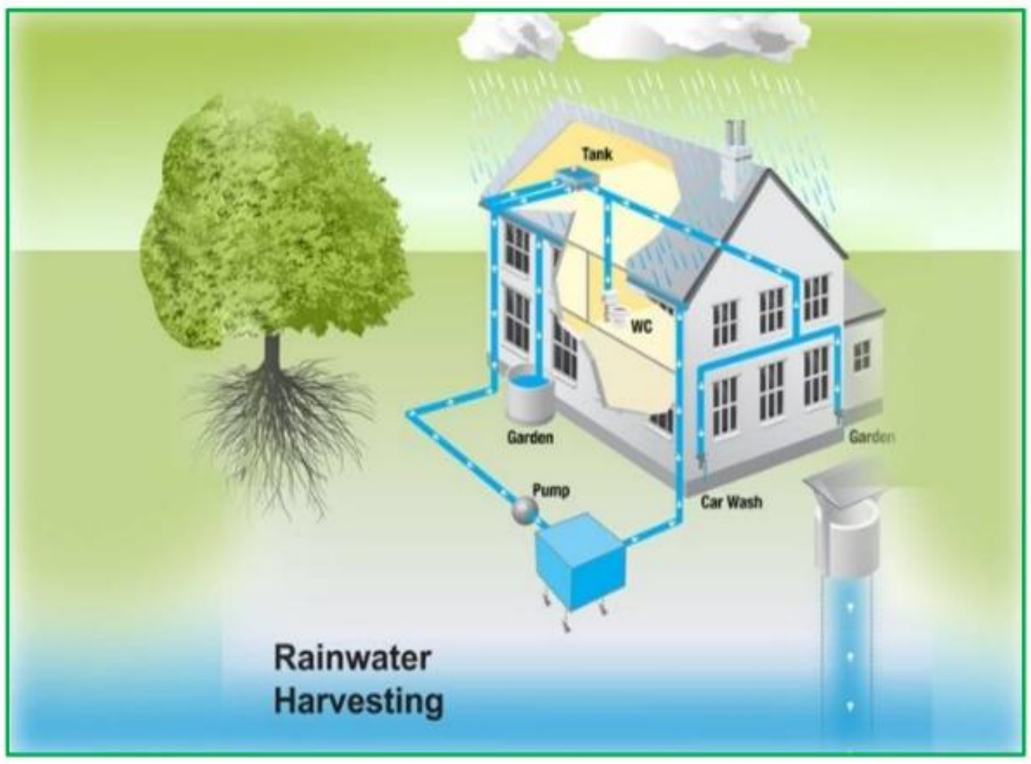

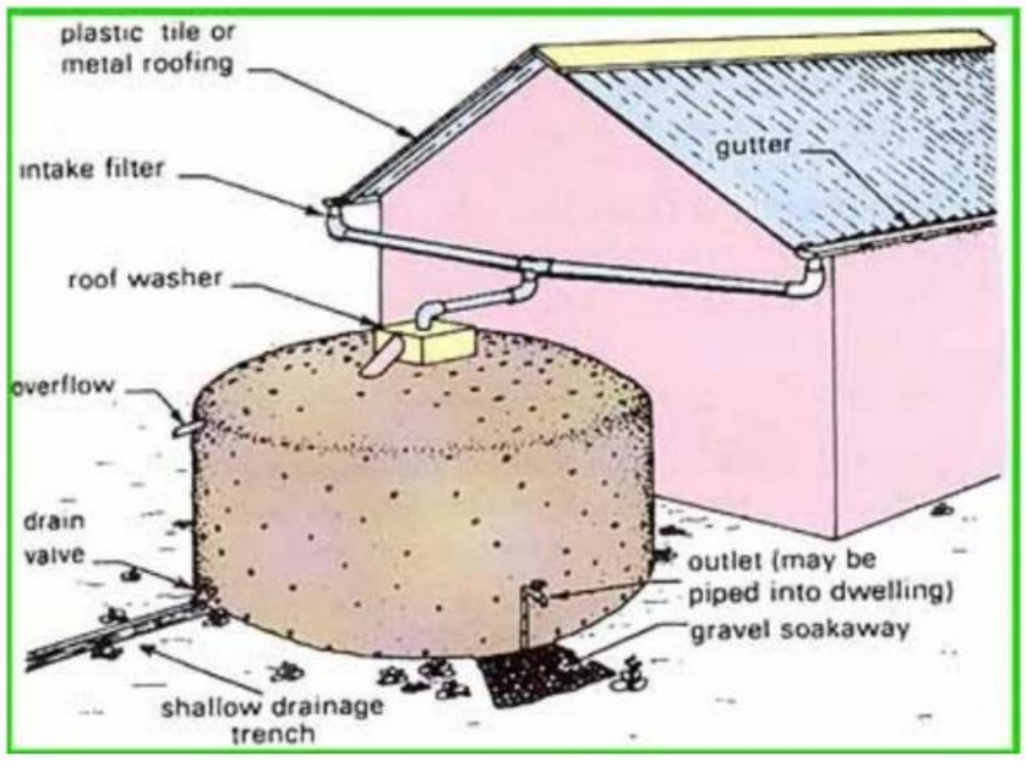

जल संग्रहण करने के लिए हमारे कॉलेज शासकीय गजानन्द अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय भाटापारा (छ.ग.) के द्वारा एक छोटा सा प्रयास किया गया हैं हमारे प्रोफेसर शैलेन्द्र कुमार वर्मा (सहायक प्रध्यापक भूगोल) के द्वारा प्रयोगिक भूगोल के छात्रो को सोख्ता गड्ढा निर्माण हेतु कार्य दिया गया हैं। जिसके अन्तर्गत प्रत्येक विद्यार्थी को 4 बाई 4 फिट लम्बा, चौड़ा एवं गहरा **सोख्ता गड्ढ़ा निर्माण किया जाना हैं। जिसमें वर्षा जल को संग्रहित किया जायेगा**

आप सबको विदित है कि छत्तीसगढ़ में भांठा ऐसी भूमि को कहा जाता हैं जिससें नमी की कमी एवं मोटे कणों से युक्त मिट्टी होती हैं। हमारा भाटापारा क्षेत्र भी ऐसी ही भूमि से आच्छादिन हैं। अतः स्वाभाविक रुप से हमारा भूमि में नमी की कमी हमेशा रहती हैं। जिसका सीधा असर हमारे भू–जल स्तर पर पड़ता हैं। वर्तमान समय में भाटापारा क्षेत्र में भू–जल स्तर में लगाातार गिरावट दर्ज की गई हैं। पहले बोरवेल की अधिकतर गहराई 100 फीट तक हुआ करती थी जिसमें किसी परिवार को वर्ष भर के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध हो जाता था। लेकिन वर्तमान में 300 फीट की गहराई पर भी पर्याप्त भू–जल उपलब्ध नहीं। हो पा रहा हैं।

भू–जल स्तर के गिरावट के प्रत्यक्ष कारणों में प्लास्टिक एवं पॉलीथीन का बढ़ता उपयोग एवं शहरों एवं गांवों में बएता कांक्रीकटरण हैं। भाटापारा क्षेत्र में प्रतिवर्ष औसत वर्षा 100–120 से.मी. होती हैं। यदि हमारे घर का छत 1000 वर्गफीट का हैं तो इस छत में वर्षाके रुप में 1,00,000 लीटर जल प्राप्त होता हैं जो कि एक परिवार के घरेलु उपयोग हेतु प्र्याप्त हैं। लेकिन संरक्षण के अभाव में यह जल कांक्रीट की गलियों और नालियों में बहकर सीधे नदियों के माध्यम से समुद्र में पहुंच जाता हैं और इस प्रकार जो वर्षा का जल हमारे घरों के आसपास भूमि द्वारा सोख लिया जाता था वह व्यर्थ ही बह जाता हैं।

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

अब समय आ गया हैं जब हम केवल संगोष्ठियों में चर्चा, पोस्टर या नारा लेखन तक ही सीमित न रहें। अभी समय है जमीनी स्तर पर कार्य करने का। अतः शासकीय गजानन्द अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय भाटापारा अपने छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता लाने तथा उसका संरक्षण एवं संवर्धन करने हेतु प्रेरित करने के लिए प्रतिबध्द हैं। भू–जल संरक्षण एवं संवर्धन इसका एक भाग हैं।

महाविद्यालय द्वारा पर्यावरण अध्ययन विषय के अंतर्गत सत्र 2020–21 में यह परियोजना कार्य **"वर्षा जल संरक्षण"** अपने विद्यार्थियों को सौंपा जा रहा है। इस आशा के साथ कि इससे महाविद्यालय परिवार एवं भाटापारा क्षेत्र लाभान्वित होगा।

सोख्ता गड्ढ़ा का निर्माण कुछ इस प्रकार से किया गया हैं।

प्रथम स्तर में बड़े आकार के ईट, पत्थर आदि का प्रयोग किया गया हैं। **द्वितीय स्तर** में मध्यम आकार के पत्थर का प्रयोग किया गया हैं। तथा **तृतीय स्तर** में समान्य गिट्टी का प्रयोग किया गया हैं। जिसे निर्माण कार्यो में भी उपयोग किया जाता हैं।

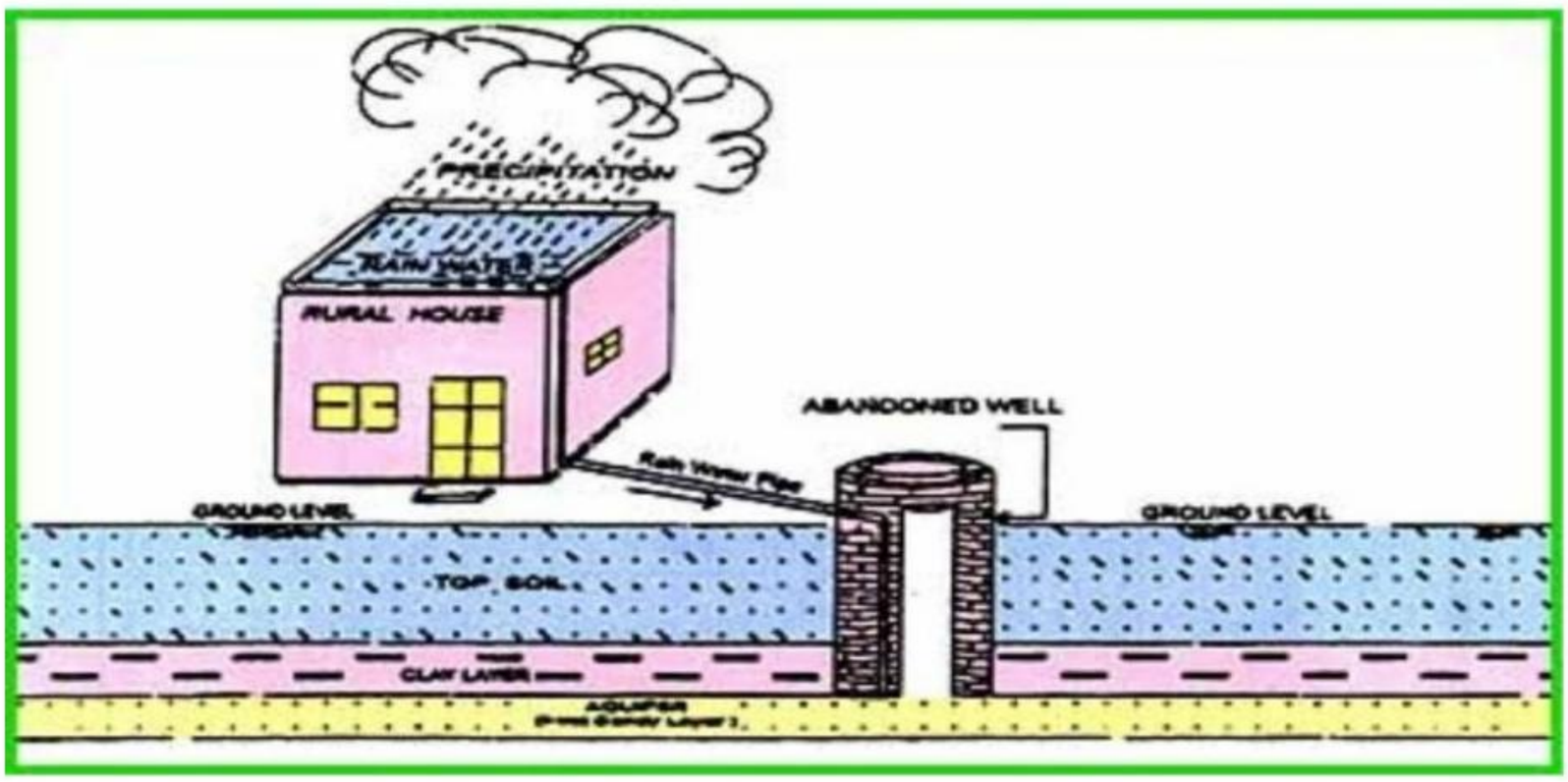

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

फोटो ग्राफीक एवं गैलरी

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

GOVT. G.N.A. P.G. COLLEGE BHATAPARA

Asst. Pro. Shailendra Kumar Varma
Govt. G.N.A. P.G. College Bhatapara (C.G)

ALL STUDENT OF GEOGRAPHY B.A. FINAL YEAR 2020-21

SHEETAL TIWARI | RITU KANTALE | DIMPAL SINGH | DURGESHWARI SEN | PURNIMA SAHU | MANISHA RATRE

RAJESH KUMAR SAHU | KUMAR DHRUW | BHIKHAM DEWANGAN | ARUN GENDRAY | KISHAN SAHU | JOHIT YADU

DHANESHWARI NISHAD | HRITU SAHU | MUSKAN GUPTA | KIRAN RAJAK | MARIYA MASIH | RITESHWARI SAHU

MAHESH KUMAR | ARJUN YADU | MUKESH SAHU | SHAILANDRA KUMAR | SANTOSH SAHU | PARDESHI DHRUW

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner

Notes

28/04/2021 05:03:18 AM

Scanned by TapScanner